भाषा,साहित्य,संस्कृति,संवेदना आउर शोध के भोजपुरी त्रैमासिक

सँझवत

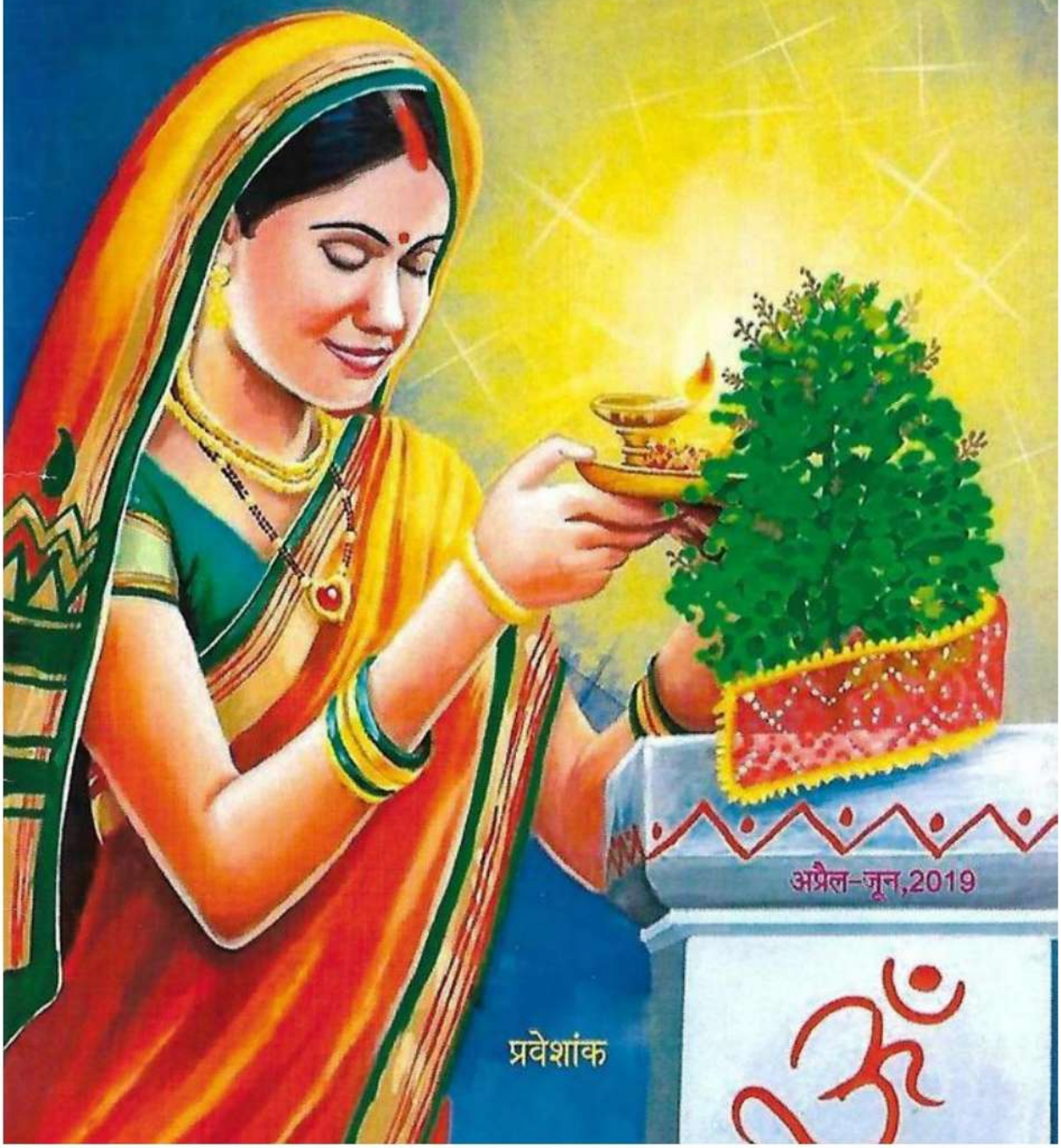

अप्रैल-जून,2019

प्रवेशांक

सँझवत

(भाषा,साहित्य,संस्कृति,संवेदना आउर शोध के भोजपुरी त्रैमासिक)

परामर्श मंडल

डॉ. नंदकिशोर तिवारी

डॉ. नर्वदेश्वर राय

डॉ. भगवती प्रसाद द्विवेदी

डॉ. ब्रजभूषण मिश्र

डॉ. अरुणमोहन 'भारवि'

डॉ. नीरज सिंह

डॉ. जयकांत सिंह 'जय'

संपादक व प्रकाशक

सीमा मिश्र

प्रधान संपादक

डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल

सँझवत

(भाषा,साहित्य,संस्कृति,संवेदना आउर शोध के भोजपुरी त्रैमासिक)

प्रवेशांक : अप्रैल-जून, 2019

संपादक व प्रकाशक

सीमा मिश्र (अवैतनिक)

प्रधान संपादक

डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल (अवैतनिक)

संपादकीय संपर्क :

बड़कागाँव, सबल पट्टी, पोस्ट- नगपुरा, मुख्य डाकघर- दुल्लहपुर,

जिला- बक्सर (बिहार) पिन-802118

अस्थायी वर्तमान पता- 2/6, पार्वती नगर, जी.पी.रोड, 24 परगना, प.बं.

मोबाइल : 9051540846 (सायं 5 बजे से 9 बजे तक)

ई मेल : sampadaksanjhavat@gmail.com

मूल्य : चालीस रुपए मात्र (डाक खर्च अलग से)

एह अंक के आवरण सज्जा : श्री ओमप्रकाश अमृतांशु

विशेष प्रतिनिधि :

दिल्ली- श्री केशव मोहन उपाध्याय

पटना- श्री भगवती प्रसाद द्विवेदी

आरा- श्री कृष्ण कुमार

बक्सर- डॉ. अरुणमोहन 'भारवि'

मुजफ्फरपुर- डॉ. ब्रजभूषण मिश्र

प्रकाशित रचनन का विचार आदि से संपादक के सहमति अनिवार्य नइखे। अपना रचना खातिर लेखक खुदे जिम्मेदार होइहें। विवाद का स्थिति में न्यायक्षेत्र पटना होई।

स्वत्वाधिकारी सीमा मिश्र द्वारा संपादित, प्रकाशित व मुद्रित। अव्यावसायिक प्रकाशन।

विषय-क्रम

संपादकीय

तबे स्वस्थ आलोचना के राहि विकसित होई- रामरक्षा मिश्र विमल/4

लेख

1 वसंत मे जयदेव के राधा-माधव- मार्कण्डेय शारदेय /7

2.भोजपुरी जियत-जागत परखर संस्कार के कोखि हऽ- सौरभ पाण्डेय /11

3.धरम के कोख से जनमल स्वतंत्रता के पहिलका संग्राम- केशव मोहन पाण्डेय /58

4.दडक बन के कबंध- दिनेश पाण्डेय/35

साक्षात्कार

5.कुछ दूर बा हिमालय, हिम्मत करे चाही /17

(डॉ. नंदकिशोर तिवारी से रामरक्षा मिश्र विमल के बातचीत)

कहानी

6.सेरोगेट मॉम- कृष्ण कुमार /50

लघुकथा

7.बहस- सीमा मिश्र/34

कविता / गीत / गजल /

8.गीत(2)- रामरक्षा मिश्र विमल/42

9.गीत(2)- सगीत सुभाष/57

10.गजल- आसिफ रोहतासवी/10

स्तंभ

11.**धरोहर**- महेंद्र मिश्र के एगो लोकप्रसिद्ध भक्ति गीत/6

12.**समीक्षा**- लोक संस्कृति बचावे के एगो बरियार कोशिश- दिलीप कुमार ओझा/48

किताबि : एक नजर में /43-46

13.भिहिलात बतासा जइसन -भगवती प्रसाद द्विवेदी / 14.के हवन लछुमन मास्टर- कृष्ण कुमार/ 15.बरमूदा त्रिकोन- कृष्ण कुमार / 16 मुट्ठी भर भोर- डॉ. अरुणमोहन भारवि / 17 तीन डेगे त्रिलोक- गगा प्रसाद 'अरुण'/ 18.मातृभाषाई अस्मिता बोध- डॉ जयकात सिंह / 19 जिनिगी पहाड हो गईल- डॉ. गोरखनाथ 'मस्ताना' / 20 भिखारी ठाकुर के भक्ति भावना मे लोक मगल के आयाम- रामदास राही / 21.माया माहाठगिनि- डॉ. गदाधर सिह / 22.आरोही रचनावली भाग-1- चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह 'आरोही' /23 जिनिगी रोटी ना ह- केशव मोहन पाडेय / 24.खरकत जमीन बजरत आसमान- डॉ. ब्रजभूषण मिश्र / 25.जबरी पहुना भइल जिनगी जयशंकर द्विवेदी / 26 विविधा' पाडेय कपिल / 27.हमार पहचान'- जलज कुमार अनुपम / 28.चम्पारन सत्याग्रह गाथा - गुलरेज शहजाद

29.**व्यक्तित्व**- भोजपुरी सगीत के बहुमूल्य रत्न अरुण राय/64

तबे स्वस्थ आलोचना के राहि विकसित होई

जब हम भोजपुरी साहित्य का दशा-दिशा पर आपन मंतव्य देबे बइठल बानी त बुझाते नइखे कि का लिखीं। जवना पीढ़ी का जोगदान के अबहिंओ कवनो तुलना नइखे, ओकर एक-एक खंभा ढहत जा रहल बा। चौधरी कन्हैया प्रसाद जी, बरमेश्वर सिंह जी, पांडेय कपिल जी, प्रो. ब्रजकिशोर जी, अनिरुद्ध जी जइसन विभूति एक-एक कइके हमनी का बीच से संपूर्ण विश्राम खातिर निकलत गइल। मन डबडबाइल बा आ चिंतो में बा। इहाँ सभ के सँझवत परिवार के लोर भरल श्रद्धांजली।

वर्तमान पीढ़ी कुछ ज्यादा व्यस्त बिया बाकिर पहिले नीयन कुछ खास नइखे लउकत। तब अतना जरूर बा कि टिटकारी आ हुंकार में बढ़ोत्तरी भइला से कुछ ना कुछ जरूरे लिखा रहल बा। "नई भीति उठेले पुरानी भीति गिरेले" वाली बात शाश्वत बिया। भोजपुरी का कुछ क्षेत्रन में ई बात लउकत बिया। एगो पत्रिका बन्न त दोसर चालू होत जातरी सन। भोजपुरी खातिर नेतागिरियो सम्मान के विषय हो गइल बा, ई सुखद बा।

भोजपुरी आलोचना आ शोध का क्षेत्र में संतोषजनक काम नइखे लउकत। उमेदि कइल जाए के चाहीं कि एने कावर समर्थ लोगन के विशेष ध्यान जरूर जाई।

ज्यादा व्यस्त रहला का कारन पत्रिका का प्रकाशन में विलंब होत चलि गइल। अब ढेर देरी होत रहे, एहसे समहुत कइल जरूरी हो गइल रहे। केहू का रचना में कवनो प्रकारके काट -छाँट नइखे कइल गइल। अइसन एगो विशेष नीति का तहत

कइल गइल बा। जब तक मानकीकरण के एगो मोटामोटी स्थिति नइखे बनि जात तब तक संपादक मंडल कवनो तरह के परिवर्तन से पहिले सूचित कइल नीमन बूझी। टंकण का लापरवाही का चलते वर्तनी के जो कवनो भयंकर भूल लउकी त ओकरा के बिना सूचना दिहले संपादित क दिहल जाई। अस्तु, पत्रिका का कवनो रचना में जो अशुद्धि भा कमी लउके त ओकरा खातिर खुद लेखके के जिम्मेवार समुझल जाएके चाहीं।

एह अंक में ऊ सभ कुछ नइखे आ पावल जवन संपादक का योजना के अंग रहे। ऊ धीरे-धीरे आई आ दू-तीन अंक का बाद पत्रिका के वास्तविक स्वरूप सुनिश्चित हो जाई। तब तक हमार आग्रह होई कि पत्रिका के रूप सँवारे खातिर आपन बहुमूल्य सुझाव जरूर दीहल जाव।

संपादक आ लेखक लोग के मनोबलो बढ़ावल एगो बड़हन जोगदान होला साहित्य खातिर। जब केहू नोटिसे ना ली त लुत्ती अङारी कइसे बनी ? एहसे निवेदन बा कि रउँवा सभ आपन टिप्पणी जरूर दीं, जवन रउँआ भावे ओह पर आ ओह पर त जरूरे, जवन रउँआ खटके। मुँहदेखउअल कइल व्यावहारिकता के एगो अंग ह। एकरा से बाँचल आसान ना होला बाकिर उत्कृष्ट साहित्य का सृजन के प्रेरणा एकरा से ना मिले। एहसे बिना लागो लपेट के बात जरूर लिखीं, तबे स्वस्थ आलोचना के राहि विकसित होई। जय भोजपुरी।

रामरक्षा मिश्र विमल

महेंद्र मिश्र के एगो लोकप्रसिद्ध भक्ति गीत

कइसे जाईं ससुरारी।
खेलत मैं रहनी हो सिपुली मउनिया
से आई गइले गवना के नियारी हो।
कइसे.....।
बाबा घरे रहितें मोरा भइया घरे रहितें
त फेरी दीते डोलिया कहाँरी हो।
कइसे.....।
काँचहीं बाँसवा के डोलिया बनवलें
से लागी गइलें चारि गो कहाँरी हो।
कइसे.....।
नाहीं मोरा लूर ढंग एकहू रहनवाँ
पिया हमसे करिहें पुछारी हो।
कइसे.....।
मिली जुली लेहु सभ सखिया
सलेहरी
से छूटी गइलें बाबा के दुआरी हो।
कइसे.....।
कहत महेन्दर कुछ नीको ना लागे
से खुलि गइलें कपट कँवारी हो।
कइसे.....।

साइते केहू भोजपुरिहा होई जे "अंगुरी में डँसले बिया नगिनिया रे, ए ननदी सैंया के जगा द।" आ "सासु मोरा मारे रामा बाँस के छिउँकिया, ए ननदिया मोरी रे सुसुकत पनिया के जाय।" जइसन पुरबी के लोकप्रिय धुनन से परिचित ना होई। पुरबी के पुरोधा महेंद्र मिश्र जी के गीतन के देखिके कहल जा सकता कि ऊ सही मायने में प्रेम के जीवन जियले रहन। साइत ईहे कारन बा कि उनका श्रृंगारिक कवितन में जहाँ प्रेम के कोमलता लउकताटे ओहिजे भक्तिपरक रचनन में भक्त कवियन नियन मानव नियति के चिंतो देखात बा।

वसंत में जयदेव के राधा-माधव

मार्कण्डेय शारदेय

प्रकृति काव्य कर्म के सरस सरणि हियs।संसार के कवनो भाषा एकर तिरस्कार नइखे कर सकत।इहे कारण बा जे सभ भाषा-बोलियन के शिष्ट भा लोक साहित्य में प्राकृतिक छटा के दर्शन होला,सजीव चित्रण लउकेला।

जब सम्पूर्ण प्राणिजगते प्रकृतिमय बा.... रहन-सहन,खाइल-पीअल,सूतल-जागल...,एही पर निर्भर बा तs केहू कइसे एकर अवहेलना कर सकता।साहित्यकारिता अपने आप में कला हियs।प्रकृति के सहयोग के बिना साहित्य कइसे सत्य, शिव आ सुन्दर हो सकेला।ई नटी लेखा बिया।ई नाट्य-कौशल में एह तरे परिपूर्ण बिया जे एकर अंग-अंग से कमनीयता प्रस्फुटित होत रहेले।नायिका के समस्त भेद-उपभेदन के अभिनय करेवाली प्रकृति नियन प्रवीण शायदे कवनों मानवी हो सकेले।

संस्कृत साहित्य खातिर प्रकृति अत्यधिक आराध्या रहल बिया।इहाँ एकरा के छोड़िके काव्य-सर्जन होइए नइखे सकत। एही से साहित्य शास्त्र के आचार्य लोग काव्य में प्रकृति-चित्रण के आवश्यक मानत एकरा के स्थापित कइले बाड़ें। साहित्य-दर्पणकार विश्वनाथ भारतीय परम्परा के अनुरूप महाकाव्य के विषय-वस्तुअन के गणना के प्रसंग में कहताड़ें-

सन्ध्या- सूर्येन्दु- रजनी- प्रदोष- ध्वान्त-वासराः।
प्रातर्मध्याह्न-मृगया-शैलर्तु-वन-सागराः।।[1]

अर्थात् महाकाव्य में सन्ध्या, सूर्य, चन्द्रमा, रात, गधबेर, अन्हरिया, दिन, सबेर, दुपहरिया, आखेट, पर्वत, ऋतु,वन आ समुन्दर आदि के चित्रण अन्य लक्षितन के साथे भइल जरूरी बा।खाली विश्वनाथे के अइसन मत नइखे,बलुक सभ काव्यशास्त्री लोग के अइसने विचार रहल बा।एही से वैदिके काल से अनवरत प्राकृतिक छटा के झाँकी हमनी के समस्त काव्यन में लउकेले।

संस्कृत कवियन में सबसे अधिक प्रकृति-भक्त आ चित्रकारी करे में अनुपम कालिदास मानल जालें। उनुकर प्रकृति मानव-सहचरी के रूप में बहुते संवेदनशील बिया। इहे कारण बा कि ई मनुष्य के दुःख-सुख में मित्रवत व्यवहार करत दिखाई पड़sतिया। चाहे

'अभिज्ञानशाकुन्तल' होखे भा 'मेघदूत' एह कथन के पुष्ट प्रमाण देबे में समर्थ बाड़ें। हँ,'ऋतुसंहार' के प्रकृति नायक के कुछ दोसरे तरे प्रभावित करsतिया।

कालिदास के उत्तरवर्ती कवियन में बारहवीं सदी के महाकवि जयदेव दिखाई पड़sताड़ें, जेकरा पर कालिदास के कुछ अधिका रंग लागल बा। इनिकर काव्य प्रकृति के चरण-नूपुरन के सुमधुर ध्वनि से खाली संस्कृत-जगते के प्रतिध्वनित नइखे करत,बलुक कतने भाषा गीतगोविन्द के अनुवाद कइके ओह स्वर-माधुरी के आत्मसात करे के आ अपना अंग-अंग के निनादित करे में आगे अइली सँ।

जयदेव के 'गीतगोविन्द' राधा-माधव के संयोग-वियोगमय अनुभूतियन के मर्मस्पर्शी वाणी हs।ई काव्य एक ओर गीतिमयता से विभोर करsता तs दूसरा ओर राधा-कृष्ण के भावाभिबोधमय चारु क्रीड़ा सहृदयन के हृदय के वशीभूत करsतिया।दौत्य पटुतो एकर एगो बड़ अंग बा।कवि ऋतुराज वसंत के आधारशिला बनाके अपना काव्य के रचना कइले बाड़ें। ई सम्पूर्ण काव्य वसन्ते के परिधि में चक्कर लगावत लउकता। कथा में व्रजराज श्रीकृष्ण आ राधा रानी के ऋतु-क्रीड़ा में विप्रलम्भ चरम पर बा।एह विरह-मिलनमय काव्य के प्रारम्भिक स्थिति में विरह-विधुरा राधा वसंत के कारण उद्दीप्ति से पीड़ित श्रीकृष्ण के खोजत वन-वाटिकनि के खोज मारsताड़ी।चारो ओर फइलल वासंतिक वैभव जरल पर नून के काम करsता। हाय! राधा के प्राणवल्लभ अन्य व्रजवनितनि के साथे विलास करsताड़ें आ एने राधा विरह-व्याकुल तड़प रहल बाड़ी।

बेचारी दूती के तs कामे हs दूनो के जोड़ल।एह से ऊ कबो राधा के मनौवल करsतिया तs कबो कृष्ण के।ऊ दूनोन के दुरवस्था के एक-दोसरा से बताके मिलावल चाहsतिया।मानिनी राधा के मान आ व्रजचन्द्र के कपट प्रवृत्तियन के कारण ओकरा जल्दी सफलता नइखे मिलति।एह काव्य के प्रणय-निवेदनो उच्च कोटि के बा,जवन कवनो भावुक के झकझोर के रख देबेवाला बा।

वसंत आ गइल बा।कहूँ नागकेसर के लता फुलाइलि बिया, कहूँ नवमल्लिका गदराइल बिया तs कहूँ आम मोजराइल बा।कहूँ पाटलि आ पलाश मन मोह रहल बाड़ें तs कहूँ अन्य पेड़-पउधा वातावरण में मादकता घोरि रहल बाड़ें सँ।एही मादक वातावरण में कवि के अइसन लागsता जे संसारे निर्लज्ज हो गइल बा- विगलित-लज्जित जगदवलोकन -तरुण-वरुण-कृत-हासे।[2]

अगर अइसन ना होखित तs कवि के आराध्य आ आराध्या के मन काहें

विचलित होखित।एने वसंत-केलि खातिर आतुर राधा कृष्ण खातिर तड़प रहल बाड़ी आ ओने गोपीनाथ गोपियनि के प्रणय में नथाइल बाड़ें। छलिया कन्हा के ई हाल जानि के वृषभानु-नन्दिनी के हृदय पर का बीतल होई, ई तs कवनो सहृदये समझ सकsता।एही से व्यग्रता से परिपूर्ण ऊ अपना सखी से कहsताड़ी—

सखि हे! केशि-मथनमुदारं रमय मया सह।
मदन-मनोरथ-भावितया सविकारम्।।[3]

अर्थात्, हे सखि! केशि नामक दैत्य के संहार करेवाला व्रजराज से एह कामभाव से आसक्ता के मिला दे। कारण ई बा जे 'विरहिजनस्य दुरन्ते'[4] अर्थात्, ई ऋतु विरहियन खातिर दुःसह बा।

कबो-कबो मिलन में अवरोध भा देरी से राधाजी के आपनि विश्वस्त सखियने पर अविश्वास होखे लागsता—

यामि हे कमिह शरणं सखीजन-वंचिता।[5]

(सखियन से ठगाइल अब हम केकरा शरण में जाई?)

महाकवि जयदेव खाली विरहिणी नायिके के दशाचित्र नइखन खिचले ,बलुक विरही नायको के चित्र अपना कुशल कलम से बनवले बाड़ें। साँच बा जे ई मौसम दूनो पक्षन खातिर समान दुःखदायी होला। एही से रसिकराज के दशा के वर्णन करत दूती कहsतिया—

तव विरहे वनमाली सखि! सीदति।[6]

(ए सखी! तहरा विरह में वनमाली व्यथित बाड़ें।)

दूती आगे कहsतिया जे ए मानिनी! मान छोड़ आ चलS। ऊ "धीर समीरे यमुना-तीरे वसति वने वनमाली।"[7] अर्थात्, वासन्तिक मन्द पवन से युक्त यमुना तट पर वनमाली तहार इन्तजार करsताड़ें।

श्रीकृष्ण के संतप्तावस्था एह गीति में देखल जा सकेले—

प्रिये चारुशीले! प्रिये चारुशीले! मुंच मयि मानमनिदानम्।
सपदि मदनानलो दहति मम मानसं देहि मुखकमल-मधुपानम्।।[8]

अर्थात् , हे प्रिये ! हे सुचरित्रे ! हमरा पर कृपा करs। अकारण भइल मान के परित्याग करs आ आपन मुख-रूपी कमल के रसपान करावs।काहेंकि कामाग्नि से हमार चित्त जर रहल बा।

विरह-स्वर राधा आ माधव दूनो से मुखरित भइल बा। बाकिर, कृष्ण में छल-छद्म के सन्निवेश दृष्टिगोचर होता तs राधा निश्छल होइये के मानिनी लउकताड़ी। अन्ततः दूती आपनि चाटूक्तियन से दूनो के मिलावे में सफलता पा जातिया,जवना से एह दूनो के मधुमास दुःखदायी ना,सुखदायी हो जाता।

जयदेव के ई गीतगोविन्द एक ओर श्रृंगार-प्रधान बा तs दोसरा ओर भक्ति-प्रधान बा। एक ओर लय आ ताल

से संवलित बा तऽ दोसरा ओर काव्यकला के बारीरियन से भरल। एह तरे ई काव्य वसंत के आलंबन बनाके काव्य पुरुष श्रीकृष्ण आ कवितामयी राधा के सजीव झाँकी प्रस्तुत करता।

संदर्भ :

1. साहित्यदर्पण- विश्वनाथ
2. गीतगोविन्द- जयदेव- 1.3.5
3. गीतगोविन्द- जयदेव- 2.6.1
4. गीतगोविन्द- जयदेव- 1.3.1
5. गीतगोविन्द- जयदेव- 7.1.1
6. गीतगोविन्द- जयदेव- 5.1.1
7. गीतगोविन्द- जयदेव- 5.2.1
8. गीतगोविन्द- जयदेव- 10.1.1
9. गीतगोविन्द- जयदेव
10. गीतगोविन्द- जयदेव
11. गीतगोविन्द- जयदेव

गजल

आसिफ रोहतासवी

अब ना बाँची जान बुझाता बाबूजी
लोग भइल हैवान बुझाता बाबूजी

पढ़ल लिखल हमनी के सब गुरमाटी बा
उनका वेद कुरान बुझाता बाबूजी

आपुस में टंसन बा फिर हमरा गाँवे
खेत जरी, खरिहान बुझाता बाबूजी

बबुआ तऽ अबहींए आँख तरेरऽता
एक दिन बनी महान बुझाता बाबूजी

सटलीं पेवन जतने ओतने छितराइल
जिनगी भइल पुरान बुझाता बाबूजी

हमरा छान्ही पर होरहा भूँजीं आसिफ
राउर का नुकसान बुझाता बाबूजी

भोजपुरी जियत-जागत परखर संस्कार के कोखि हऽ

सौरभ पाण्डेय

कवनो भासा खलसा बोलीचाली आ भाव अभिव्यक्ति के साधन ना होले। ऊ अपना समाज के, ओह समाज के भूभाग के इतिहास, परम्परा आ बेवहार-संस्कार के पालनहार होले। अपना भूभाग के मूल भासा के लेके निर्लिप्त भइल कवनो समाज आपन रहिवासी लोगन के बेवहार, बिचार आ संस्कार के कुसमइये मउअति जोहत समाज अस हो जाला। भासा के लिहाज से देखल जाव त कवनो भासा बातचीत के अनुसासन के दस्तावेज त होइबे करेले, ओह भूभाग के जन के भावना, ओह जन लोगन के मनोदासा, रहिवासी लोगन के रङ-ढङ, उनकर बोल-बिचार के सरूप आ संस्कार के सम्हारे, माँजे आ जियावे के उपाय होले। एही से भासा के 'माई' कहल जाला। आ तवना प 'माईबोली' के भासाई लालन-पालन आ संस्कारी-उपकार के त बतिये दोसर बा ! एह बात के जतना हाल्दे बूझि लियाव ओतने सही रही। एही समझ प हिंदी आ भोजपुरी के अंतर्संबंध, भासाई गठन आ बोलनिहारन के वजूद निर्भर करी। ई ना होखी, त भासा के लेके कुतर्की लोगन के ना कबो सवाल चुपाई, आ ना ओह सवालन प के मिलल जवाबन के कवनो माने-मतलब रहि जाई।

जवन छेत्र में भोजपुरी बोलल जाले, ओही छेत्र से हिंदी के बिकास में आधुनिक-काल में असल खाद-पानी आ भासाई तागत मिल रहल बा। एह छेत्र के बिद्वानन के लगन, तपस्या आ धुरंधर बिद्वता से हिंदी आजु भासाई संस्कार के हिसाब से एगो धनी भूभाग के भासा गिना आ बुझा रहल बिया। एह सउँसे प्रक्रिया के गहिराहे ताड़ल जाव, त हिंदी के आजु के सरूप में भोजपुरिहा छेत्र के शब्दन के योगदान बूझल जा सकेला। बाकिर, ईहो ओतने साँच बा, जे एह जानल-बूझल बात के हलुके ना, बलुक बेजाइँओं बूझे आ बुझवावे के निरधिन कोरसिस हो रहल बा। एह बेतुक के काम में नोहे-रोयें भिड़ल बा हिंदी-प्रेमी' जमात के लोग। जे हिंदी के बिकास के नाँव प भोजपुरी के

बलाते बिगाड़ क रहल बा। भासा के लेके जवन बात सोझ-साँच बा, ओहू के एह जमात के लोग तूर-मरोर के सँकारे-नकारे के उतजोग कऽ रहल बा। एह बिन्दू प हिंदी-प्रेमी जमात के ढेर सदस्य-समर्थक ना खलसा अनजान बाड़े, बलुक जनकार भइलो प गहिराहे धेयान नइखन देत जा। ई तथाकथित बिद्वान लोग हिंदी के भारत के सबले तागतवर भासा के रूप में देखे के चाहत बाड़े। ई उचितो बा, आ, लोगन के मन में अइसन भाव होखहूँ के चाहीं। बाकिर भोजपुरी भासा के लेके अगर एह लोगन के मन में हेठा के भाव बा। त ई अइसना बिद्वान लोगन के कमखेयालिये जाहिर कऽ रहल बा। अइसन लोग ना हिंदी के भासाई मरम बूझि रहल बाड़े, आ ना भोजपुरी भासा के आजु ले जियत आवे के आ लगातार बनल रहे के मतलब बूझि रहल बाड़े। भोजपुरी भासा के तौर प खलिहा बोले-बतियावे के साधने ले ना हऽ, बलुक भोजपुरी जियत-जागत परखर संस्कार के कोखि हऽ। भोजपुरी सङे कवनो अनीती एगो बड़हन छेत्र के संस्कारशीलता के कोखि उजारे-जारे के उतजोग के बरोबर कहाई। अबहीं ओह लोगन के बुझात नइखे, जे एगो संस्कारी जगत के खिलाफ ऊ लोग कतना बड़ अनीती कऽ रहल बा। अइसना उलार उतजोग से भोजपुरी के जवन हो रहल बा ऊ त होइये रहल बा, हिंदियो के लेके लोग गड़हे खोन रहल बा। बताईं, बे रस-पानी के कवन भासा बाँच सकेले ? जबकि हिंदी के नाँव प हिंदी छेत्र के आन्ह भासा कूल्हि के दरकचे के अलबताह सोच काम कऽ रहल बा? बहुत हलुक सोच आ छिछल दिमाग के लोगन के हाथे आजु हिंदी के झंडा परि गइल बा। एह लोगन के कइले हिंदी के जवन रूप-सरूप सोझा आ रहल बा, ऊ हिंदी के आजु ले बनल सर्वसमाही सरूप के साफा नास रहल बा। एह लोगन के कारनामा आ हिंदी भासा के लेके बनल एह लोगन के सोच आन्ह भासाभासी लोगन के मन में हिंदी के लेके रोस आ नकार के भाव पैदा क रहल बा।

आजु ले अंगरेजी के अधिनायकवादी सरूप के लेके ई अङुरी उठत रहल हा, जे ई जवना छेत्र भा देस-जगहि में बेवहार में आवेले ओह देस-जगहा में बोलनिहार के एगो अइसन जमात ठाढ़ कऽ देले, जवन अंगरेजी भासा आ बेवहार के पोसुआ आ अंगरेजी भासा आ बेवहार प परुआ हो जाला। बाकिर अइसना पोसुआ आ परुआ जमात के अहं आ बर्ताव-भाव के फुलौना अतना ना बड़ होला, जे ऊ जमात अपना के ओह जगहा के महंत वर्ग गिने लागेले। अंगरेजी बोलनिहारन के एह अधिनायक वादी सरूप के कारने मूल देसी भासा प

खतरा बन जाला। आजु संसार के कौ गो ना देस बाड़न सऽ, जहवाँ से ओह जगहि के मूल भासा एह अंगरेजिये के कारन बिला गइल बिया आ अंगरेजी ओइजा कवनो ना कवनो तरीके रोजमर्रा के भासा बन चुकल बिया। एह कारने, ओह देस भा छेत्र के मूल संस्कार ले बदल चुकल बा। भारत देसओ में आपन प्रसासनिक महत्त्व के कारने अंगरेजी लगातार बिस्तार पावत आजु ले पूरा धूम से बनल बिया। बलुक ई कहल सही होई, जे अंगरेजी ढेर जोरदार तरीके से जमल बिया।

कहे के नइखे, जे अंगरेजी के बचवले राखे आ देस के प्रसासन में बनवले राखे में कवन वर्ग के बिसेस रुची बड़ुए। का हिंदी भासा के लेके आजु अतीव उत्साह में तर्क-बितर्क करे वाला हिंदी-प्रेमी जमात के लोगन में ईहे प्रवृती नइखे देखल जात ? का उनका में ईहे अधिनायकवादी आ साम्राज्यवादी प्रवृती बढ़ल नइखे जात, जे भलहीं दोसर भासा मर-बिला जाउ, बाकिर हिंदी के झंडा ऊँच रहो ? भलहीं झंडा ऊँच रखला के फेर में जवन ना कुतर्क रचे के परो ? तबे नू जवना बिन्दू आ तर्क के सहारे ई जमात हिंदी के आगा-सोझा कऽ रहल बा, ओहसे हिंदी मठाधीसन के भासा बनल ढेर लउक रहल बिया। कबो हिंदी के लेके आन्ह भासाभासी सूबा के लोग बिदुकत रहले। बाकिर अब त हिंदी छेत्र के लोगओ आपन मूल भासा के लेके चिंतित हो चलल बाड़े। एह लोगन में भोजपुरी भासाभासी ढेर प्रभावित बाड़े। कारन ई, जे अइसना हिंदी-प्रेमी लोगन तथाकथित आंदोलनकारी के मन में भोजपुरी भासा के लेके अनघा कृतघ्न-भाव भरल बा।

कहे के नइखे, जे अइसना हिंदी -प्रेमी आ आंदोलनकारी लोगन के कूल्हि बिन्दू आ सवालन प कवनो संवेदनशील मन आपन कपार पिटला के अलावा का क सकेला? ओह लोगन के कहनाम बा, जे भोजपुरी भासा के संविधान सम्मत भासा के अठवाँ अनुसूची में जगह मिल गइल त हिंदी में से एके हाली करीब बीस करोड़ भोजपुरियन के संख्या कढ़ा जाई, आ संख्याबल में भइल ई कमती हिंदी से 'राजभासा' के पद छिना जाये के महती कारन हो जाई। अब ओह लोगन से केहू खँखारि के पूछो, जे खलिहा हिंदिये 'राजभासा' कब रहल? का हिंदी अगसरे राजभासा बनल रहे? आकि, सङहीं आउर कुछ भासा के ई पद-नाँव दिहल गइल रहे? हिंदी के लेके कहे के कुछऊ कहाव, संविधान सभा में हिंदी के सङहीं 'राज-काज के भासा' हिंदी से इतर कौ गो ना भासा के सूची बनल रहे। राजभासा अधिनियम,मने Official Languages

Act 1963, कवनो 'राष्ट्रभाषा' के बात कबो कइलहीं नइखे। बलुक, 'कार्यालयीन आउर कौ गो भासा' कूल्हि के चर्चा करत सोझा भइल रहे। ओह कूल्हि भासा में से एगो हिंदियो रहे। माने ई, जे तब के संविधान सभा में भइल चर्चा के फल ई भइल रहे, जे आउर कूल्हि भासा सङे हिंदी 'राज-काज के भासा' भर ले बनि के रहि गइल रहे। एही 'राज-काज के भासा' के आगा 'राजभाषा' क दियाइल। तात्पर्य ई, जे अधिनियम खाली हिंदी के 'राजभासा' के रूप गिनावे के अधिनियम रहबे ना कइल, बलुक ओह अधिनियम के शीर्षकवे Official Languages, अर्थात 'कार्यालयीन भासा-समुदाय', रहे। सइ बात के एकई बात ईहे भइल, जे 'राज-काज के भासा' के समुदाय में हिंदी अउरी कूल्हि भासा सङे एगो भासा भर ले बिया। एही 'राज-काज के भासा' के तूर-मरोर आ बिगाड़ के आगा 'राजभासा' क दियाइल ! त फेर, अकसरे हिंदिये के काहें 'राजभासा' गिनल जाता? जहवाँ तक 'राष्ट्रभासा' पद-नाँव जइसन पद के सवाल बा, त ई पद भारत के संविधान कवनो भासा के नइखे देले। एह हिसाब से हिंदी के 'राजभासा' भा 'राष्ट्रभासा' कहि के का भरम आ धोखा नइखे फइलावल जात? भारत के लोगन के ई कूल्हि पदनाँव के हवाला दे के भावनात्मक रूप से बेकूफे नू बनावल जा रहल बा ! अतने ले ना, हिंदी-प्रेमी जमात के एही सवाल सङे एगो उपसवालओ जुड़ल बा। जे भोजपुरी भासा के हिंदी से अलगा भइला के घोसना होते ब्रज, अवधी, छत्तीसगढ़ी, राजस्थानी, बुंदेली, मगही, अंगिका आदी भासाभासियो आपन-आपन भासा के हिंदी से अलगा करे के मांग करे लगिहें। आ दोसर ई, जवन महाअतार्किक बात बा, जे भोजपुरी के लगे रामचरितमानस, पद्मावत भा सूरसागर अस एकऊ ग्रंथ नइखे। त ओह लोगन से ई सवाल पूछे के चाहीं, जे कवन-कवन संविधान सम्मत भासा में अइसन ग्रंथ बाड़न सऽ? का सिंधी में? डोंगरी में? आ कि मैथिली में? आ फेर भोजपुरी में कवन शैली आ अंदाज के रचना नइखे? आ ना, त का रामचरितमानस, भा पद्मावत, भा सूरसागर हिंदी भासा में लिखाइल ग्रंथ हवन सऽ? का एह ग्रंथ के भासा के वाक्य-रचना आ ओकर व्याकरण ऊहे बा, जवन हिंदी के वाक्य-रचना आ व्याकरण के होला? ना ! तब ई कवन तर्क हऽ?

दोसर सवाल ई उठावल जा रहल बा, जे बोले वालन के संख्या के आधार प विकीपीडिया दुनिया के एक सइ प्रमुख भासा के सूची जारी कइले रहे, जेकरा में हिंदी के चउथा अस्थान दिहल गइल रहे। एकरा पहिले हिंदी के दोसर

अस्थान मिलल रहे। एह जमात के लोगन के कहनाम बा, जे ई बदलाव एह से भइल, जे हिंदी के सङे भारतीय भासा के समुदाय में भोजपुरी, अवधी, मारवाड़ी, छत्तीसगढ़ी, ढूँढाढी, हरियाणवी आ मगही भासा तक के सूची बनावल गइल बा। बाकिर ई बात अबकी एह साल फेरु बदल गइल बा। हिंदी सभले ढेर बोलाए वाली भासा चीन के मण्डारिन के पछाड़त पहिला नम्बर प काबिज हो गइल बिया। बाकिर, असल मुद्दा इहवाँ ई नइखे। आ ना होखे के चाहीं। हिंदी खलसा का हिंदी छेत्र के लोगन द्वारा बोलल जाले? जवाब बा, ना। त फेर संख्याबल के आधार प हिंदी छेत्र से भोजपुरी के बिलगाइ के लसारे के कवन जरूरत बा? ई त अंगरेजी बोलनिहारन के साम्राज्यवादी सोच आ मनोदासा के अपनावल भइल नू? का एह मनोदासा आ प्रवृती से हिंदी-प्रेमी जमात के उत्साही लोग आपन हिंदी के साम्राज्यवादी सरूप नइखे देत? कहे के बात नइखे, जे अंगरेजी बोले-लिखे आ बूझे वाला लोगन के संख्या भारत में तीन फीसदी से ढेर नइखे। बाकिर, अंगरेजी के आजुओ भारत में का स्थान बा? अंगरेजी भासा के बलाते सीखे वालन के का संख्या बा? तब संख्याबल के कवनो मानक के कवन भाव भा मान दिहल जाव?

हिंदी-प्रेमी जमात के लोगन के एगो अउरी अतार्किक बिन्दू बड़ुए। जे भोजपुरी के समृद्धी से हिंदी के आ हिंदी के समृद्धी से भोजपुरी के फाएदा तबे होखी, जब दूनो भासा सङे रहिहें सऽ। भोजपुरी के संविधान के अठवाँ अनुसूची में अस्थान मिलल घर-बँटवारा अस होखी। बाकिर, का ई एकदम से खडजंत्री सोचवालन के बोल ना भइल? अतने ले ना, तनि हइहो देखल-सुनल जाव - अठवाँ अनुसूची में गिनइला के बाद भोजपुरी के कबीर के हिंदी के कबीर कइसे कहइहें? कबीर त तब हिंदी के ना, बलुक भोजपुरी के कहइहें। का कवनो कवी चाही जे ओकर साहित्यिक-समाजिक औकात समेटात जाओ? अब ना बताईं, एह बकवाद आ कुतर्क प केहू का कऽ लीही? जवन बेकूफी प एगो बुधीमान मनई कान ले ना दीही, ओहके मुद्दा कहि के चर्चा कइल जा रहल बा। सबले बड़ बात ई बा, जे का भोजपुरी हिंदी के बोली हऽ? सही ढङ से सोचल जाव त, जवाब मिली, ना। काहें जे, कवनो भासा के कवनो भासा बोली कहाई, एकर मानक आ कसौटी का बा? एह बिन्दू प साएते कवनो हिंदी-प्रेमी के सर्हियाइ के घाँटी फूटल बा। काहें जे, हिंदी आ भोजपुरी के उद्गम आ व्याकरण दूनो अलगा-अलगा बा। बलाते एक परिवार के बताई के खलसा भरमजाल बिनाइल बा। एह तरी

त बंगलओ भासा के हिंदी के बोली कहि के गिनल जा सकेला। बा बेंवत अइसन गिनती करे के? कहि देसु लोग बंगला भासा के हिंदी के बोली ! नजरुल इस्लाम से लेले रवींद्रनाथ ठाकुर से लेले बंकिमचंद्र, शरतचंद्र, विमलमित्र आदी-आदी सभ साहित्यकार हिंदी के गिनाए लगिहें आ हिंदी अउरी समृद्ध हो जाई ! हई अनीत चली? त फेर भोजपुरी के लेके काहें तीर-तुक्का चलावल जा रहल बा?

हिंदी-छेत्र के भरसक सभ भासा के 'हिंदी के बोली' कहि के अइसन ना बनावटी तर्क गढ़ल गइल बा, जे हिंदी के सर्वसमाही सरूप तक प सवाल उठे लागल बा। भासा उद्गम के हिसाब से देखल जाव, त जहवाँ हिंदी शौरसेनी आ ओकरा आगा कौरवी से आपन रूप, गठन आ व्याकरण लिहलस, ओइजे पूर्वांचल के सभ भासा, जइसे, अवधी, भोजपुरी, भोजपुरी के आउर सरूप, मगही आ मैथिली आदी भासा के उद्गम प्राच्य भासा से जनमल मागधी आ अर्धमागधी से मानल जाला। कहे के माने, जे अवधी भा भोजपुरी भा मगही भा मैथिली आदी भासा के घोर धुर्तई आ खडजंत्री ढङ से 'हिंदी के बोली' कहि के प्रचारित कइल गइल बा। एह भरम के अब ना तूरल-काटल गइल, त एह छेत्र के आपन संस्कार, बेवहार आ भाव-भावना ले नसा जाई। हिंदी के पोसे आ बाढ़े में एह छेत्र के लोग मनगर उतजोग जरूर कइले बा। बाकिर एह उतजोग में समर्पण के भावना रहल बा, कवनो तरी के गुलामी के ना। अगर हिंदी-प्रेमी जमात के लोग एह बात के भोजपुरिहा लोगन के मजबूरी बुझि लेले बा लोग त ओह लोगन के एह बिसै प अध्ययन कइल जरूरी बा। ग्रियर्सन आ चटर्जी जइसन बिद्वानन आ शोधकर्ता लोगन का बाद कतना लोग एह भासा के लेके काम कइले बा ?

भोजपुरी पढ़ल जाव, लिखल जाव।

कुछ दूर बा हिमालय, हिम्मत करे चाहीं

(डॉ. नंदकिशोर तिवारी से रामरक्षा मिश्र विमल के बातचीत)

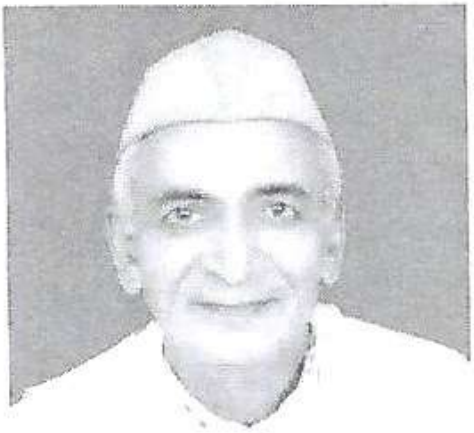

डॉ. नंदकिशोर तिवारी हिंदी आउर भोजपुरी के स्थापित विद्वान आ साहित्यकार हईं। इहाँके लेखनी साहित्य का हर विधा में चलल बिया बाकिर शोध, समीक्षा, ललित निबंध आ (अनूदित) नाटक का सङहीं संपादनो का क्षेत्र में राउर केहूँ सानी नइखे। चार-चार पत्रिकन के नियमित संपादन कइल आसान ना होखे, बाकिर बिना थकले आजुओ राउर सक्रियता जारी बा।

रउँआ एगो भाषा-वैज्ञानिक हईं। 'सुरसती' पत्रिका में अपने के द्वारा कइल विवेचन पत्रिका के विशेष आकर्षण होखल करेला।

इहाँका वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा का स्नातकोत्तर हिंदी विभाग के अध्यक्ष रह चुकल बानी।अपने के अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पटना आउर भोजपुरी अकादमी, पटना का सङे सुरुए से जुड़ल रहल बानी। भोजपुरी में इहाँके 13 गो अनूदित नाटक प्रकाशित बा, जवन संस्कृत के नाटककार भास का नाटकन के अनुवाद हटे। 'पत्थल के मेहरारू' नामक राउर एगो मूलो भोजपुरी नाटक प्रकाशित बाटे। आपके 8 गो शोध ग्रंथ प्रकाशित बाड़े सन। एकरा अलावे इहाँका 16 गो किताबन के संपादन कइले बानी। वर्तमान में रउरा संपादन में हिंदी के तीन गो पत्रिका- इयत्ता,प्रत्याभिता आ हृदय संदेश निकल रहल बाड़ी सन आउर सन् 2000 से भोजपुरी त्रैमासिक पत्रिका 'सुरसती' के संपादन कर रहल बानी। अपने का व्यक्तित्व आउर कृतित्व पर पी.एचडी. खातिर एगो आ एम.फिल. खातिर 4 गो शोध कइल जा चुकल बा। राउर जन्म बिहार में रोहतास जिले का बेरुकहीं गाँव में 1939 में भइल रहे। 2001 में अपने का विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्त भइल रहीं आ आजुओ पूर्ववत लेखन, संपादन आउर शोध कार्य में सक्रिय बानी।

प्रस्तुत बा उहाँ से भइल बातचीत ।

वर्तमान में भोजपुरी के मानकीकरण नइखे भइल आ निकट भविष्य में ओकर कवनो गुंजाइश नइखे लउकत। अइसना में भोजपुरी व्याकरण के रचना कतना सार्थक प्रयास कहाई ?

भोजपुरी भाषा से ज्यादा बोली ह। बोली आपन-आपन होला। माने जतना ओह क्षेत्र में आदमी बाड़न उनकर सुभाव, सिच्छा परिवारिक संस्कार आउर गाँव घर के संस्कृति के ओकरा ऊपर बहुते प्रभाव रहेला। एगो गाँव से दूसरा गाँव के जाति-बिरादर के आधार पर ओहमें भिन्नता आ जाला। अगर रउरा गाँव के बगल में अनपढ़ भाई लोग के गाँव बा, त उनकर भाषा भी दोसरे बा। बस रवाँ उनुकर बात के समुझत बानी आ ऊ राउर बात समुझत बाड़न। भोजपुरी के क्षेत्र बहुते बाड़ा बा। काशी,आरा,रोहतास,चंपारन,हजारीबाग, छत्तीसगढ़, गोरखपुर के भोजपुरी भासियन के बोले चाहे लिखे में जवन अंतर बा, ऊ स्वन के अंतर ह। ई भाषा के बहुते छोट इकाई ह। ई सिच्छा, संस्कार पर निरभर बा। गोस्वामी तुलसीदास जी संसकिरित के जानकार रहीं। एह से उहाँ के एकरा में बहुते सावधान बानी। कवन सबद कइसे बोले नीअन लिखाए के चाहीं। काहेंकि संसकिरिते एगो भाषा बा जवना के मानकीकरण के प्रस्न नइखे उठत। पूरा भारत के लोग एके संसकिरित बोली। लेकिन रूसी बोलिहन त ओहमें थोरिका उनुका भासा के गंध आ जाई। अंगरेजी हर देश के आपन अंगरेजी हो गइल बा। वर्तनी में भी भेद आइल बा। अमेरिकन इंगलिस के आपन ठाट बा, आपन वर्तनी बा। हिंदी में कामता प्रसाद गुरु के व्याकरण आ किशोरीलाल के हिंदी शब्दानुशासन में बहुते भेद के पच्छ उभरल बा। एहसे हिंदी के विद्वान भोजपुरी लिखेके फेरा में ना पड़लन। आपन बात हिंदी में कहलन। ओहिजा अतना काहें कि ना रहे। भोजपुरी व्याकरण लिखात रहे के चाहीं। कवनो प्रयास भाषा आ साहित्य में बेकार ना होखे। बनते-बिगड़ते कवनो भासा के इतिहास रचाइल बा। अदिमी के मन जतना बिगड़त बा, ऊ त भासा के आईना में लउकबे करी। जब भासा अभिव्यक्ति ह त ऊ मनवे से ना उपजी। मन कल्पना प्रधान होला। भासा एगो साँचा में ढलल बात खोजेला। मन के कल्पना अनेक तरह के तरक देके काट-कूट करत रहेला। भासा ओकरो के बदरी के पानी अइसन ढोवेला, बढोवत रहेला। जहँवा अवसर अनुकूल देखी,उहँवा बरिसि जाई। किरोध के राग के,द्वेष के,मनुहार के,रूसल-मनावन के,शादी-बिआह के,सराध के भासा का अभिव्यक्ति में अंतर आइल

सुभाविक बा। अध्यातम के बात अलगे होला। एकरूपता भावना के अनुसार लिखे में आवेके चाहीं। एहिजा मानकीकरणके प्रश्न अनर्गल लागेला। बेकती के भाव-भासा में जब अंतर बा त एक तरह के उच्चारण ना हो सके। भासा मे बिलगाव "तीन डेग पर पानी आ तीन कोस पर बानी" पहिलहीं से मानल बा। सिच्छित गाँव के लइकन के बोली आ अनपढ़ टोला के लइकन के बोली में अजबे अंतर दिखाई देला। स्वर,स्वन,कॉनोटेसन में एके साथे सभ में। एहसे मानकीकरण के बात लिखे में होला, बोले में ना।

आजु भोजपुरी गायन के क्षेत्र में अश्लीलता के बहुत चरचा बा। लोग-बाग चाव से सुनतो बा आ परेशानो बा। ई का हो रहल बा ? का होई एकर परिनाम ? का करेके चाहीं ?

एहिजा एगो शास्त्रीय बात उठ गइल। अश्लील आ श्लील केकरा के कहल जाला। का साहित्य में अश्लीलता होला ? समय अहथान आ व्यक्ति के साथे अश्लीलता के प्रश्न उठेला। पहिले होली आवे के दिन से पनरह दिन पहिलहीं गारी आ अश्लील वातावरण बन जाई। बाप आ बेटा सभे ओह में भाग लेत रहन। जतना गारी के बात बा भोजपुरी में, सभमें अश्लीलता रवाँ दिखाई पड़ सकेला। साधू-संत भी अपना पदन में गारी लगा के आपन बात कहले बाड़न। 'छिनरी' के प्रयोग कबीर दास जी कइले बानी। भिदंडी साथी अपना प्रवचन में महिला लोग के, बाबू लोग के गारी देके बात कहत रहीं। खाकी बाबा के मुँह से गारी हम खूदे सुनले बानी। भोजपुरी में बिना गारी के अपना बात में बल, फोर्स आइए ना सके। बड़ी शक्तिशाली भाषा ह ई। इ कवनो जरिया से अपना बात के बलपूर्वक राखे के सक्ती रखेला। एह से गायन के क्षेत्र में एकर प्रयोग हो रहल बा। लेकिन ओकर बिंब पर रउँआ बिचार करब तब पाता चली कि ऊ अनुपम बा। ओहिजा एह भाषा के कवनो जवाब नइखे। भोजपुरी संगीत परधान भाषा ह। 'ए गंगा मइया तोहके पियरी चढ़इबो', आउर 'लागी नाहीं छूटे रामा', फिलिम के गीत आजो अपना जगह पर ओइसहीं बा। ई क्लासिक के लच्छन ह। हँ, बस में, ऑटों में, सार्वजनिक जगह पर ई गीतन के परचार ना करे के चाही। ई गीत ओह ट्रक वाला लोगन के कतना उपकार करत बा। जंगल में रात-दिन गाड़ी चलावत बाड़न अपना परिवार से महिनवन अलगा रहिके। बस ओही गीतन के बल बा उनका पास। एह क्षेत्र में भी कतना, कइसन लोग सोचत बा, एहू पर बिचार करे के चाही। एगो खास वर्ग बा जेकर भोजन अइसने चाही। रउँवा केकरा-केकरा के रोकब।

एकर परिनाम कवनो बुरा नइखे होखे जात। सृष्टि आ समाज अइसहीं चलत रहेला।

भोजपुरी भाषा त बहुते विकसित भाषा ह, तबे त एकरा में तत्सम शब्दन के अभाव बा। ई का हो रहल बा ? का होई एकर भविष्य ? का होखे के चाहीं ? अइसना में एह तरह के चलन पर रउँवा का सोचतानी ?

भोजपुरी भाषा बहुत शब्द के ममिला में धनी बा। ई अपना भाषा में कवनों सब्द के ले आके प्रयोग कइले बा। जे भाई लोग अरबी-फारसी के सबद ले आवत बा, ऊ फरिके से अटपट बुझा जात बा। ओह में सरलता ना आ सके एहसे सहजता भी ना आई। तत्सम के बेवहार करेके गुर सीखे के होखे त गोसाईं जी से कवि लोग के सीखे के चाहीं, भिखारी ठाकुर से सीखे के चाहीं। उर्दू के प्रयोग शैदा जी से सीखे के चाहीं। आसिफ जी के गजलन में किसान खातिर 'दहकान' के प्रयोग भइल बा। दरअसल गजल भोजपुरी के चीज़ हइए ना ह। कुछ लोग खाँटी भोजपुरी में भी नीमन प्रयास कर रहल बाड़न। गोसाईं जी संस्कृत के पूरा शब्दावली भी भरि के आपन बात कहत बानी। परभाव कहाँ कम भइल बा ? 'इदमित्थं' कहि जाइ ना सोई। एहिजा 'इदमित्थं' के प्रयोग भोजपुरियों से सरल, सीधा बा। 'कहि जाइ न सोई' के साथे ओकर संगीत ओह में आ गइल बा। इदम्=ई, 'इत्थ' अतने बा। एथुआ सबद 'इत्थं' से ही बनल बा। कहे के मतलब ओतने बा। फारसी आ उर्दू के दस प्रतिसत सबद मिलल बा भोजपुरी में। गाँव के औरतो बोलत बाड़ी लेकिन जानत नइखी कि ई उर्दू ह कि भोजपुरी ह। हमनी के पढ़ल-लिखल लोग खातिर ई भेद–विभेद सब्दन के बा। जवन बहुत दिन से बाप भाई के मुँह में आपन अहथान बना लेलस, ओकरा के का कहे बा। ओकर प्रयोग रोकल भी ना जा सके। जब आदमी जान-बूझ के अपना अहंकार के पुहुट करे के फेरा में सबद जुटावे लागेले, त सभसे बड़हन संकट ओही घरी परगट हो जाला। कविता में अटपट भाव आ सबद ना चल सके। अनकसाउर लागेला। कविता सहज भाव के बानी ह। जइसन पानी सहज बा। पीर के बेरा ओहमें कुछऊ पड़ल होखे त गरदन तक जाए में ओकरा से अनकस बरे लागेला। कविता के सहज होखे के चाही। शब्दकोष से देखल सबद के उतारल रूप ओहमें बरदास्त से बाहर हो जाला। अङेजाय ना। सज्जन, सहदय लोग सहज भाव आ सबद के जादा आदर करेलन। कवनो भाषा आदिमी के भावे परगट कइले बा, करेला। अटपट भाव आ भाषा आवेस के कारक होला। काव्य में ओकरो व्यंजना के जगह बा लेकिन

हर समय नइखे। गीत आ मुक्तक में भावावेस के छनन के बहुत महातम बा लेकिन किरोध आ कामावेस के कतहूँ अवकास नइखे। ई असत् विकार ह। सत् विकारे के जगावल कविता के काम ह।

जवन बात रउँआ सोचत आ कहत बानी, ऊ आदर्श के बात ह। गंगा में भी मुरदा बहेलन आ नाला के पानी ओकरा के गंदा करेके कोशिश करेला। अरबी-फारसी के जाने वालन के सासन एहिजा बहुत दिन रहल बा। एहसे बहुत सबद त भोजपुरी के बोलचाल में बहुते दिन से फेंटा गइल बा। आउर ओह भासा-भासियन से भी बात करत, चाहे ऊ लोग के खुस करे खातिर अरबी-फारसी के सबदन के प्रयोग जदि आ गइल त कवनो बेजाँ नइखे। लेकिन जवन भीतर रचल-बसल नइखे, ओकर जान-बूझि के प्रयोग अनुचित कहल जा सकेला। लेकिन एह अनुशासन के माने वाला के बा ? सीखल त केहू चाहत नइखे। सभे सिखावल चाहता। साहित्य सबकर चारा जुटावट बा एहीके पोंछ पकड़ि के सभे बैतरनी पार करत बा। जतना प्रयोग बा ऊ साहित्ये करेला। एह से एह में गुबार उठेला आ धुआँ सगरो फइलेला। एकरा पर लगाम देबे वाला ऊ जमाना चल गइल, जब महाबीर प्रसाद दिवेदी जी रहीं। उहाँ के बाद सुरसती भी चल गइली आ कविओ लोग आपन पाट बदल देल। फिर ओही में छायावादी लोग के नीमन कविता निकलल। एह से साहित्य में आछा आ बुरा कुछऊ ना होखे। सभ अछे खातिर होला।

भोजपुरी साहित्य पर शोध का दिशाईं एगो सवाल बहुत उठता शोध के स्तर के लेके। कहानी गीत,गजल आदि में जे तीसों बरिस से लिख रहल बा आ पत्र-पत्रिकन में छपि रहल बा, अइसनो लोग छूट रहल बाड़े। एह लापरवाही पर का सोचल जाउ ? ई लापरवाही ह ? जान-बूझि के छोड़ल जाता आ कि डिग्री लेबे खातिर काम कइके आपन पिंड छोड़ावल जाता ?

शोध आ आलोचना लिखल साहित्य के अनेक विधन के पीछा करत रहेला। नीमन साहित्य लिखाई त आलोचना आ सोध के दिसा भी बदली। सोध के स्थिति त डिगिरी के साथ जुड़ गइल बा। रउँआ हिन्दी के एने के सोध आ पुरनकन सोध के स्तर देख लीहीं। अन्तर अपने बुझा जाई। सोध के मतलबे ह कि जवन कोई के सामने ना आइल होखे ओकरा के उपरा दिहल जाव। ओहके बारे में पूरा विवरण दिआव आ दोसरो के रहता साफ कर दिआव। काटल, छाँटल, जोड़ल, उपरावल- सभ एकरा भीतर आवेला। भोजपूरी में अतना घटिहा सोध हो रहल बा, ऊ हिन्दिओ के मात कर देले बा। बस

पंजीयन करा लीहीं आ छछलोल गाइड बनाके जतना अनरथ करे बा करीं। रउँआ भी प्रसन्न आ गाइड भी। रोवत बाड़न त विसविदालय, भाषा, साहित्य आदि। ना कहानी कहे के ढंग बा ना शिल्प के गेयान। रउँआ छपे के बात उठवले बानी। अगर कवनो चीझ छपला के साहित्य मान लिहल जाव त कुल्ही अखबारो साहित्य ह आ विज्ञापनो साहित्य ह। कुल्ही कहावतो कविता ह। लिखे वाला तीस बरिस से लिखे चाहे पचास बरिस से। ऊ का लिखत बा, कइसन लिखत बा एपर जादा धेयान चाहीं। बहुत सा भाषा में एगो-दूगो कहानी लिखके लेखक मरि गइलन लेकिन संसार के भासा भासियन खातिर ऊ गौरव बनलन। भासा आ साहित्य एगो देस आ भासा के पूँजी ना होखे। ऊ भगवान के दीहल बरदान ह। जइसे विद्वत्ता जनम-जनम के संस्कार से आवेला, ओइसहीं रचनाकार भी कबो-कबो जनमेलन। प्रकृति उनका प अपना के नेवछावर कर देले। भोजपूरी में प्रकासको नइखन तइयार होत। कोई पढ़ेवाला भी नइखे। प्रकासक तनी पाठकन के धेयान से सोचेला। लेकिन आपन लिखS आपन छापS। एहसे साहित्य के रहता आउर कँटीला हो जाला। भासा में का लिखाइल, ई जरूरी बा। बँगला के लोग कतना भासा के संपर्क में आके तब बँगला में रचना कइलस।

अंग्रजी,लैटिन,संसकिरित के ऊ लोग जादा संपरक में रहे। कला के ओरे जादा झुकाव रहे। संगीत के साधना रहे। बड़ लोग के साथ रहे। अपना भासा आ संस्कृति पर गरब रहे। सीखे के उतसाह रहे। एक रचनाकार के दोसरा खातिर परेम आ सरधा रहे। भोजपूरी में त ठीक एकरा उलटा सभे लउकत बा। बस हम ही सभ विधा के प्रनेता हईं। हमहीं कहानी लिखलीं, एकांकी आ सभ विधा में पहिलका रचना हमार ह। हम हाला कइके भोजपूरी के संविधान के अनसूची में करवा देब। ई कोई नइखे सोचत कि हम कतना पढ़ले बानी कि हम लिखब का। हिन्दी के लेखन के अनुबाद कइल खाली भोजपूरी में बा। अब समुझि में आइल कि हिन्दी के सभ बड़ लेखक भोजपूरी छेत्र के रहलन लेकिन लिखलन ऊ हिन्दी में। काहे अइसन भइल। एह से कि न त एहिजा पढ़ेवाला बाड़न ना सेवा भाव से साहित्य के सेवा करेवाला। हिन्दी सेवा के बल पर अतना बड़ा स्वरूप के पवलस। ओहिजा आपन काम के भी दोसरका के गिनावे में गरब होत रहे। भोजपूरी में दोसरका के नीचा देखा के अपना के बड़ा बनावे में अदिमी लागल बाड़न।

कई कॉलेज,विश्वविधालय आदि खातिर भोजपुरी के पाठ्यक्रम निर्माण पर कुछ

अइसनो सुने में आइल कि साहित्यकार के नाम आ विधा के चुनाव पहिले भइल आ बाद में उनुका से कुछ लिखवा के डलवा दिहल गइल। का एही से भोजपुरी के कल्याण होई ?

प्रश्न से राउर जानकारी बेलकुल ठीक बा सत-प्रतिसत। कई कालेजन में पढ़ाई सुरू भइल लेकिन पढ़ावे वाला ईहो नइखे जानत कि हम का पढ़ाइब आ केकरा के पढ़ाइब। जे बा से आपन कवनो रचना लगावत बा। भाई,भतीजा,जात,बेरादर ओकरा ऊपर बा। ओकरे के जगह देबे के बा। कुल्ही विसविदालय में हिन्दी में भी पहिले अइसहीं होत रहे। जे कमिटि में रहे, ओकरे किताब प्रकासक छापत रहे। पइसा देत रहे। पहिले शीर्षक स्वीकार होखे, तब किताब छपे। प्रांतीयता बीचे आ गइल। बिहार, उत्तर प्रदेश आ मध्य प्रदेश के लेखक लोग जादा भइलन। एहसे बिहार कहे कि हमरा के लगाव ना त तोहरो किहाँ के लेखकन के हम ना लगाइब। ई सब साहित्य के ना, छोट विचार आ संकुचित हृदय के पहिचान ह। लोभ, मात्सर्य के प्रदरसन ह। अब एह से मुकुती मिले के नइखे। भोजपूरी के कलेआन करे के पहिले अपना कलेआन के बात सोचे के चाही। दोसर चीझ ई बा कि प्रकाशकीय केन्द्र कवनो शहर में नइखे एह से लेखकन के चीझ भी केहू के भेंटात नइखे। भीतर ईमानदारी नइखे। सभे आपन काम से जादा अपना नाँव होखे के जोगाड़ में लागल बा। ओहिजा तेआग के जरूरत बा आ आपन नाँव देखल ऊ सोहाग-भाग मानत बा। राजनीति सगरो व्याप्त हो गइल बिआ। भासा आ साहित्य, देश आ जाति तेयाग के बल पर आपन स्वत्व के राछा करेला, ई भाव हमनी में हइए नइखे। दोसर बात कि हिन्दी के रच्छक पहिले राजा-महाराजा लोग रहन। अबके वातावरन बदलल बा। प्रान्त में कइएगो भासा बाड़ी। एगो अकादमी बनल त दोसरो के बने के चाही। एगो के दोसरा से परेम नइखे। लंगी मारे वाला आदत जाई ना। अकादमी बइठे के जगहा आ नोकरी दूनों के दे देलस। आजु के आदमी के एकरा से जादे का चाही।

भोजपुरी में साहित्य सृजन के वर्तमान से रउँवा संतुष्ट बानी ?

हम साहित्य के सेवक हईं। साहित्यकारन के जिनिगी भर गोड़ पोंछे वाला। सेवक धरम में सेवा से संतोख जहाँ भइल कि सेवा गइल। धरमे बिगड़ जाई। मतारी कतनो लइका के खिआवे, ओकरा कहवाँ संतोख होला। लेकिन भाई लोग जे आपन रचना किरिपा कइ के भेज देला, देख लीहींला। लागेला अउर बढ़ियाँ लिखा सकत रहे। छपे के ओह में रचना के अतमा मू जाला। भाषा के संस्कृति ओकर

अभेयास ह, बोलीं चाहे लीखीं। रात दिन के गुनावन ह, घंटा भर के नाहीं। बड़ लेखकन के रचना के पढ़ला से भीतर से अच्छा बात के गुच्छा निकले लागेला। या त खूब पढ़िके चिंतन करी, धेआन करीं। कुल्ही सवारथ के ओकरा पर नेवछावर कर दीहीं, तबे कवनो बात अइसन निकली जे सबकर हृदया में बइठ सकेला। अपना सवारथ के परमारथ बनावले रचना करम ह। एहमें अपना प्रति आ समाज के प्रति सात्विक निष्ठा होखल जरूरी बा। साँच अतमा के गुन ह। ओकरा पाछे सभ साँच बा। ओकरे से परपंचो में सँचाई झलकेला। भिखारी ठाकुर में ऊ सँचाई उतरल बा। अबो उनकर जवाब कोई ना दे सके। किरन, कुंजन में उहे सचाई, सहजाई बन के चमकत बा। आसिफ के गाँव-घर वाला गजलन में कुछ ऊहे सचाई बा। बिमल में थोरिका टेढ़िआ के ओकरा व्यक्त कइल गइल बा। हमरा जवन लउकत बा, ओकरा के अउर साफ करिके कहीं त जइसन भोजपुरी भासा के सरूप आ सकती बा, ओकरा के उतारल सधारन प्रतिभा के कवि से संभव नइखे। सभको से एह भासा में लिखल भी संभव नइखे। एकर गँवई रूप भोजपुरी से जादा हिन्दी में चित्रित भइल बा। प्रेमचन्द, जायसी जी अइसन लेखक भोजपुरी के मिललन। ऊ लोग एह संस्कृति से हिन्दी भासा के प्रभावित कइलन।

भोजपुरी संस्कृति भी वीरता के कदर करेवाला ह, टेक के राखे वाला, भगती से सभकर पाँव पूजेवाला, आस्तिक समाज के उपज ह। एकर कवनो आहट कवनो रचना में हमरा कम देखेके मिलल। एकरा में हास्य व्यंग्य त बात के डेगे-डेगे कउचत रहेला। कवनो बेपढ़ल अदिमी से बतिया के देखीं, ओकरा समुझे में तनिको देरी ना लागी। उ बड़े-बड़े पढ़ल-लिखल के बात में छाका छोड़ा दीही। हमार माई के अछर-ग्यान ना रहे लेकिन हर बात में एगो मुहबरा आ कहाउत परसंग में मढ़ देत रहे। हमरा बुझाय कि हमरा से नीमन कहनी कहि सकेले। अतना सटीक बात कि ओकर कवनो जवाबे ना जूरे। हितोपदेस के सुरुए में एगो असलोक आवेला। ओकर अरथ ह कि कुपुत्र पग-पग पर कलेस देवे वाला होला। माई कहे अपना भाषा में 'पुतर-कुपुतर भइले दुखित सरीरा। बिनु आगी काठी के भसम सरीरा॥' अब एकरा कथ से संसकिरित के पंडितन के कथ के मिला लीहीं। एह से अपना अनुभव के पका के कुछ लिखाई तबे ऊ कवनो भाषा के सिंगार बनी। भोजपूरी के साहित्य सृजन में रोआवे, हँसावे, रँभावे, कउआवे के क्षमता एने भेंटात नइखे। तबो सेवा होखत रहे के चाहीं। दादा अपना नाती से जादा चहिहें, अपना नीअन ओकरा से

आसा रखिहें त छोभ होई, संतोष नाहीं। हमरा समने संसकिरित आ हिन्दी के बिसाल साहित्य बा, ओकर बूनो भर भोजपूरी में खोजब त कलेस होई कि संतोख। एहसे सभ ठीके कहे के चाहीं। लेकिन हर समया पर ई सभ खोजाई त का मिली, एकरो धेआन रखे के चाहीं।

भोजपुरी में पाठकन के अभाव काहें बाटे ?

भोजपुरी में पाठकन के अभाव आजुए नइखे, बराबरे बनल रही। एहसे कि पढ़े में एह भासा के कठिनाई बा, बोले में आसानी बा। पढ़हीं नइखे आवत लोगन के। कवनो सास्तर के बातो एह में लोग नइखे लिखत। भोजपूरी में भासन भी सभका देबे ना आवे। जे लोग अखबारन में स्तंभ लिखत बा कबो-कबो ओहमें न व्यंग बा न हास्य आउर ना कहे के चातुरी। लोहा सिंह के संवाद बात के बतंगड़ रहे, लालू ओकरा के दोहरा के लीडर हो गइलन। जगजीवन में भी भोजपुरी बोले के अद्भुत छमता रहे। लोग सुनत रहे। लेकिन लोहा सिंह जब सिनेमा बनवलन त ऊ एको दिन चलल। रेडियो में ऊ संवाद ठीक रहे। उनकर बोले के कला भी अलग रहे। एह से पढ़ेवाला लोग से सुनेवाला लोग भोजपुरी में ज्यादा बाड़े। पढ़े वाला काम शिक्षित विद्वान लोग जादा करेला। अइसन लोग मैथिली, बँगला में जादा बा। लोग अपना भाषा के प्रति जादा समरपन भाव रखेला। ऊ लोग अंग्रेजी, हिन्दी से जादा बँगला, मैथिली के अखबार पढ़ेला। सास्तर में दूनो भासा भासियन के समान गति बा। अइसन बात भोजपूरी इलाका में नइखे। ई लोग राजनीति से जादा जुड़ल बा। जातवाद जादा बा। भाषावाद कम बा। इसकूल-कवलेजअपना -अपनाजात के बा। ऊ लोग एक दूसरा से द्वेष करेला। साहित्य में एकरा के टिकाऊ बनावे के जुगुत में पाठकन के अभाव रहेला। रउँआ विद्वान हईं त भोजपुरी मत बोली। मैथिली आ बँगला में घरे-बहरी सभ विद्वान मैथिली आ बँगला छोड़िके हिन्दी में बातें ना करिहें। एह से भोजपुरी में पाठकन के अभाव होखल सुभाविक बा। रचना छापे में, रचना के समझे में, रचना पर आपन निस्पच्छ प्रतिक्रिया देबे में भोजपूरिया लोग संकुचित मनोभाव के बाड़न। ना नीक के नीक कह सकस ना बाउर के बाउर। नीक के बाउर सिद्ध करे में ऊ आपन दिल-दिमाग के जादा जोर से लगावेलन। दलबंदी में भोजपूरी भाइयन के जादा विश्वास बा। जइसन लाठी के जोर, ओइसने भोट के जोर। सवारथ आपन-आपन जोर मरले रहेला। आँखि खोलिके एह 'अवध के लूट' के बिसविदालय में देखलीं। प्रसाद, पंत, अज्ञेय, गुप्त जी के रचना हटवा के अपना लोगन के सड़ियल रचना मेमर लोग जे

सिलेबस के मालिक रहे, ऊ लइकन से जोर -जबरदस्ती कइके पढ़वावल। भोजपूरी पाठ्य सामग्री मँगवा के देख लीहीं, ओह में का पढ़े के बा। असली बंसवाद त ओहिजे देखाला। हम सेवा में नइखीं त हमार पढ़ावल, बइठावल त ओहिजा बा। जवन चाहब तवन करब। नेत के नावें नइखे, ओहिजा बस कुनेते-कुनेते। परसंसा समाज में आछा के होखे के चाहीं आ कुमारगियन के नीना होखे के चाही। जात में पहिले कुजात छँटात रहन। समाज में उनकर हूका -पानी बन हो जात रहे। अब कुजात, कोई रहिए ना गइल। सभे ब्रह्म भाव से बराबर बा। तब पढ़ेवाला आउर सुनेवाला दूनों के महातम रहे। ऊहो परंपरा खतम हो गइल। सभे बकता हो गइल, स्रोता कतहीं खोजले पर नइखन मिलत। ओकरा खातिर दस गो भेख धरे के परत बा। रावनी भेख, जती के भेख धइला प सांति के सीता के रथ पर बइठा के ले जाइल जा सकेला, घर में राखिके घरनी ना बनावल जा सके। राजनीति के धुरंधर 'रैली' आ 'रैला' कइके भीड़ लोग जुटा सकेले लेकिन आपन एगो मत ना बना सकस। एगो मत बनावे खातिर भीतर-बाहिर एक होखे के परी। एक दिन के भोजन मिल जाए से पूरा जीवन ना कटि सके। भोजपूरी के पाठक बनावे खातिर रसगर भोजन परोसे के परी। पाठकन के रूचि पर साहित्य लिखाला आ साहित्य पाठकन में रुचि पैदा करेला। दूनों के जीवन बनल बा एक दोसरका के खातिर । भोजपूरी में लिखल ना कोई किताब खरीदे के नाँव पर पइसा खरचत बा ना उतसाह बढ़ावे खातिर परकासने करावे में मदद करत बा। एह से एकरा साहित्य के परचार नइखे हो पावत जतना चाहीं।

संस्कृत नाटकन के अनुवाद में राउर अतना रुचि काहें बाटे ?

संसकिरित के नाटक साहित्य भारथे नाहीं विश्व साहित्य के धरोहर ह। ओह में एके साथे सब कुछ बा- संगीत, नृत्य, साहित्य, कथ्य, संवाद, अभिनय, लोक, सास्तर आ वेद। कथन भंगिमा अतना कवित्वपूर्ण बा कि ओकर सानी दोसरा भासा में खोजलो प नइखे मीलत। जब हिन्दी में एगुड़ो नाटक ना लिखाइल रहे त एह भासा के नाटकन के बड़ा दिल-दिमाग लगा के विद्वान लोग एकर अनुवाद कइल। कुछ लोग आधार बना के मौलिक नाटक लिखल। चंडकौशिक के तर्ज पर 'सत्य हरिश्चन्द्र' भारतेंदु जी लिखलन। ओइसन रुचिकर, संस्कार के बनावे वाला, बहुत कम नाटक हिन्दी में लिखाइल। हमरा मन में ईहे भाव आइल कि ननदी भउजइया, विदेशिया, बेटी बेचवा, बिधवा बिआह जइसन नाटक से अकेले भोजपूरी के कलेआन ना हो सके। एह से

संसकिरित के नाटकन के अनुवाद कइके देखल जाव कि ऊ भोजपूरी में उतरत बा कि ना। बड़ा नीमन लागल ऊ अनुवाद। एकरा में समेसया ई परल कि संसकिरित के नाटकन के संवाद में जगह-जगह पर सलोक (कविता) आइल बा। सलोक वर्णिक बा, ओकर अनुवाद एकदमे भोजपूरी में कठिन बा। ओकर चुनौती के लेकिन स्वीकारहीं के रहे। भास सभसे पुरान नाटककार रहन। उनुकर नाटक दरजन में रहे। कुछ छोट कुछ बड़। जब अनुवाद सुरू कइलीं त ओकरा संवाद के भोजपूरी कविता में करे लगली बड़ा मेहनत करे के परल। ठेठ में कुछ तत्सम के सहायता से जब काज पूरा होखे लागल त बुझाइल कि कालीदास भास सभे भोजपुरिहे रहे। सोचत रहे लोग भोजपूरी में, कविता बनावत रहे संसकिरित में। एह से भोजपूरी नाटकन के पढ़िके जवन परिवेश के छाप मन पर पड़ल रहे ऊ अनुवाद से कुछ हलुक हो गइल। नाटक खातिर इतिहास के घटना वर्तमान से जादा मुफीद आ पुरजोर होला। प्रसाद जी नाटक खातिर इतिहास के घटना के चुनलीं। आजादी के समय ओकर बहुते जनता पर प्रभाव पड़ल। अब नाटक के अस्थान टी. वी. ले लेलस। नाटक श्रव्य आ दृश्य दूनो विधा के मुकुट ह। ओकर अस्थान रेडियो नाटक में श्रव्य हो गइल आ टी. वी. सिनेमा के बदला में दृश्य। तबो अबहिना टी.वी. पर भोजपूरी गीतन के पूरा शोर बनल बा।

हवलदार त्रिपाठी जी के भोजपूरी मेघदूत के अनुवाद वाला काम बहुते आछा बा लेकिन ओकर परचार कहाँ भइल? हमरे नाटक के परचार कहाँ भइल? के पढ़ल, के ओकरा पर दूगो सबद के टिपनी भेजल। हम खुस बानी कि भोजपूरी खातिर कुछ काम कइलीं। कुछ संसकिरित के बिदवान लोग एह काम के सराहल। ओही में एगो नया नाटक लिखा गइल- 'पत्थल के मेहरारू'।

रउरा मोताबिक स्टैंडर्ड भोजपुरी के क्षेत्र कौन होई ?

मानक भोजपूरी के क्षेत्र त आरा बक्सर ससराम के कहल जा सकेला लेकिन खाँटी भोजपूरी के क्षेत्र छपरा, सिवान आ चंपारन भी बा। मानक कवनो एगो के कइसे कहल जा सकेला। अंतर त सभन में थोर-जादा बड़ले बा। बनारसी भोजपूरी के आपन ठाट बा। 'ऊ कहलन, ऊ कहलँ' में का अंतर बा ? अनुनासिकता त दूनो में समान बा। लेकिन खाली कहे में एगो में कोसली के गंध बा आ दोसरका में भोजपूरी के। मानकीकरण खातिर अगर प्रयास भी होखे त ऊ पूरा तवर पर ना हो पाई। ई हर भासा के सामने समस्या बा। अंग्रेजी में भी बा। अमेरिकन अंग्रेजी के

आपन स्पेलिंग आ बोले के ठाट बा। एहसे एकरा खातिर 'ईहे होखे, ईहे हो सकेला' के भाव ना आइले मानकीकरण कहाई। रउँआ लिखीं, मानकीकरण हिन्दी में कहाँ आइल ? दक्खिन भारत के हिन्दी अलग पहचान बनवले बा। एहसे एह बात पर जादा सोचें के काम नइखे बुझात। कवनो एक क्षेत्र के भोजपूरी के मानक कहल कठिन बा।

भोजपुरी भाषा आ साहित्य का भविष्य पर राउर विचार जानल चाहतानी।

भोजपूरी भासा आ साहित्य के भविष्य बहुते नीमन कहल जाई। नीमन जबून त अपना भीतर के भाव होला, वस्तुस्थिति भविष्य के केहू जानल ह ना। गुणात्मक रूप आ संख्यात्मक रूप दू गो चीझ ह। गाँधीजी त युग में केहू एगुड़े हो सकेला। लेकिन जनसंख्या भी राष्ट्र के सबलता खातिर जरूरी बा। एहसे रचनाकार भी आछा-बुरा बराबरे रहल बाड़न सभे तुलसी पत्ता ह। को बड़ छोट कहत अपराधू। काल सभसे बड़ा सत्य ह। दूध के दूध आ पानी के पानी ऊ परगट कर देला। आछा-खराब संसार में सगरो बा, जवन नीमन लागे। लोग के रुचि में विभिन्नता ओकर प्रकृति ह। ओकरा के कइसे हटावल जा सकेला ? समय आ परिस्थिति भी एकरा में आपन पार्ट अदा करेला। आजु के अखबार साहित्य के निकाल के कइसे जी रहल बा। ओकर आपन साहित्य बन रहल बा। ओकर असर त जन-मानस पर होइबे करी। असिच्छित मेहरारू भी अंग्रेजी के सबद बोलत बाड़ी आ बिगड़ल हिंदी। हवा चल रहा है, लइकी सीट पर लुढ़क गइल। एहसे भासा साहित्य के भविष्य कवनो राष्ट्र के जीवन लेखा होला। ओकर अलगे जीवने बा। जवन चलत होखे, ऊहे ठीक ह। ना चलले ही चेतना के कमी कहल जाला।

भोजपुरी में भिन्न-भिन्न मुख्य विधन जइसे कहानी, कविता, निबंध, उपन्यास, जीवनी, नाटक, आत्मकथा, एकांकी आदि में संख्या आ स्तर दूनो का हिसाब से सामग्री के स्थिति कइसन बा ?

भोजपूरी में देखा-देखी साहित्य के विधा लिखात बाड़ी सन। हिन्दी में जवन बा ऊ एहू में होखे के चाहीं एह भाव से। कोई समाज के विसेसता के एह में आग्रह नइखे बुझात। कविता कहानी के बात लीहीं त केहू के प्रयास सराहनीय नइखे लागत। भाव आ कथ्य दूनो बड़ा छोट स्तर पर खड़ा लउकत बा। कई गो विश्व के अइसन भासा बा जवना के नाँव लोग नइखन जानत लेकिन ओह भासा के अनुवादित कहानी कविता पढ़िके लागेला कि रचना कवनो बड़-छोट भासा के बाँदी ना ह। ऊ जनमजाते महरानी हीय। जीवनी त कम लिखाइले बा। निबंध

बहुत कम लिखाइल बाड़ सन। हिंदी के अनुवादित अंस के गंध ओह में सगरो बा। आपन चिंतन के कमी बा। उपन्यासन में गहराई से समस्या पर विचार नइखे आइल। लागत बा खाली गंदगिए के ढेर पर भोजपूरी समाज भइठल बा। लेखक ओकरे के उसका के, खोदि-खोदि के देख रहल बाड़न। आत्मकथा के त एकदमे अभाव बा। एकरा के लिखल कठिन काम ह। जीवन के सत्य के सही-सही कहल-लिखल बहुते कठिन ह। एहसे एह विधा में रचना भइल भी कठिन बा। एकांकिअन के भी खस्ता हाल बा। एकांकी आ नाटक के शोहरत ओहनी के मंचन से होत रहेला। अब कुल मंच टूटिके एगो राजनीति के मंच रह गइल। टी.वी. घरे-घरे आ गइल। एह संक्रमण काल में साहित्य के नास त होइबे करी। एकांकी के एगो दोसर रूप पनपल बा जवन टी. वी. पर आवत बा। एकांकी के जवन रूप हिन्दी में रामकुमार वर्मा आउर अश्क में मिलल ओइसन कहाँ केहू भोजपूरी में देखात बा ? सारगर्भित संवाद होखे चाहे कारुणिक भाव पैदा करेवाला। भोजपूरी में 'सीता के लाल' में देख लीहीं करुना भाव कइसे व्यक्त कइल जाला। हास्य देख लीं एके साथे। किरन जी में वीर रस देख लीहीं, सब्दसक्ती के तीनों रूप एके साथे। ओइसन कम देखे के मिली। कश्यप जी के कहानी 'मछरी' जइसन क गो कहानी लिखाइल ? जतन करे के चाही, ओही में से केहू के माध्यम से सुरसती माई किरिपा करिबे करिहन। जइसन लेखक के संस्कार होई, ओइसन छबि उतरबे करी।

भोजपुरी साहित्य में आलोचक के स्थिति का बा ?

भोजपुरी में जतना मरियल स्थिति आलोचना के बा ओइसन कवनो बिधा आ कवनो भाषा के नइखे। लेखक लोग में कृति पढ़े के आउर ओकरा विषय में लिखे -सोचे के मद्दे बुझात नइखे। ऊ लोग जादा पढ़ल-लिखल नइखे। भोजपुरी के कवनो रामचन्द्र शुक्ल त मिलिहन ना। अगर समीक्षा भी एकह गो किताब के लोग लिखित त धरियावे में आसानी होइत। रचना के उमिरि आलोचना से बढ़ेला। कइसन बा के कान्ही पर कइसन होके के चाहीं के फूल खिलावल जाला। जइसे गीत के मरम कवनो नीमन गाए वाला चाहे संगीत के जानकारी रखे वाला भीरी नीमन से पकड़ा जाला, ओइसही, पूरा साहित्य के विधन के मरम आलोचक जानेला। ओकर गुन आ दोस के सूची दूनो ओकरा भीरी टाँगल रहेला। ऊ जब रचना पर टूटेला त लेखक आ पाठक दूनो के मोहभंग करत ओकरा गतर-गतर के चीर-फार के रख देला। आलोचक साहित्य के पाया ह। ओकरा अभाव में सभ लेखक

मनमाना लिखि के–छपा के बिना बनवले बादसाह हो जाला, बेलकुल स्वयंभू बादसाह। रचना के प्रति उनका मन में जनमजात मोह रहेला। ओकरा ऊपर जल्दी ऊ ना जा सकस। आलोचक, उनुका के चले सिखावेला, आ जल्दीबाजी से रोकेला, धीरज धरावेला, अउरी मेहनत, अभेआस करे के सिखावेला। अछाई के समने लावेला, जेकरा से लेखक अपनहू वाकिफ ना होखस। रचना सँगे अनकर रचना के सामने ले आके तुलना करेला। भोजपुरी में अब ले आलोचना के नाव पर जवन लिखाइल छपाइल बा ओकरा में तीन गो बात के जरूर जिकिर बा, जवन आलोचक के सोभा ना ह। पहिलका ई कि एह विधा के शुरूआत हमरा घर के फलनवाँ से भइल बा आ ओकर विकास हमरा भाई गोतिया आउर हमरा मित्रन द्वारा। दोसर ई कि एह रचना के पहिले फलनवाँ एह विषय पर लिख चुकल बाड़न। तीसर ई कि एकरा के ऊ अपने छपले बाड़न, अखिल भारतीय भोजपुरी से ओकर मंजूरी नइखन लेले। चउथा ई कि ओह संस्था के सदस्यन से भूमिका नइखन लिखववले। पाँचवा ई कि इनिकर सदस्यता शुल्क कतना दिन से बाकी बा, एह से एह पर आलोचना, समीच्छा ना लिखाई। कई गो कृति में आलोचना के नाँव पर गाली-गलौज, पुतरा-भतरा, तू छिनरा-छिनरी के गारी के तरज पर आलोचना के नाँव दरज बा। ई कवनो भासा खातिर कलंक मानल जाई। तंदुरुस्त दिमाग अपना जीवन के तुच्छ मान के चलेला आ देस, भासा, साहित्य के सेवा के आपन सरीर आ परान के ओकरा खातिर बराबर भेंट करे खातिर उतसाहित रहेला। आलोचक के कवि हृदय खूब पढ़ल-लिखल आ रचना के मरम तक पइठेके बउसाव होखे के चाहीं। पछपात मन में होखे त ओकरा के बिसार के बात कहे के चाहीं। ना त रचना बा आउर ना आलोचना। मानस ना रहित त सुकुल जी से आलोचना भी ना लिखाइत। रचना आलोचना दूनो एक-दूसरा के पूरक होला। भोजपूरी के रचनाकारन में गाड़ी छूटे वाला जल्दबाजी में रचना करे के आदत बा। ऊ लोग गिनती में, गिनावे में जादा बिसवास करेला। कइसन बा ई जादा महत्व के नइखे, कतना बा उनुका खातिर जादा मन के तुहुट करे वाला बा। ई हमार आपन अनुभव ह। चालीस-पचास बरिस के। छपनो प्रकार के भोजन जब मुंह में जाके पच जाला त ओकर त ओकर रूप मले के रूप में परगट होला।

भोजपुरी भाषा में 'भी' आ 'ही' के प्रयोग होखे के चाहीं कि ना ?

'भी' आ 'ही' दूनों निहचय करे खातिर लगावल जाला। कुछ विद्वान लोग हिन्दी

में एकर प्रयोग आछा ना माने। लेकिन एकर प्रयोग निहचय जरूर करेला जइसे 'हम भी जाएँगे' के भोजपूरी में दू तरह से लोग कह सकेला। पहिलका हमहूँ जाइब। हम भी जाइब। हमरो से पुछाइल। हमसे भी पुछा सकल। भोजपुरी कम में काम चला लेला । तोहरो से कहल रहे। मतलब, आपसे भी कहा गया था। एहिजा 'आपसे भी' के अरथ अपनहीं द्योतित हो जाता। हिंदी में दू गो सबदन के जोरे के काम समुच्चयबोधक कहल जाला। ई दू सबद चाहे वाक्यन के जोड़े के काम करेला। जइसे मोहन देरी से अइलन तवनों पर (तो भी) बुला लिहल गइलन। भोजपुरी में ही, हू, भी सभ एके काम करेला। ऊहो अइलन माने 'वे भी आए'। संसकिरित में 'हि' भी निश्चयात्मक ह। जइसे गीता में "ये हि संस्पर्शजा भोगाः दुःख योनव एव ते।" एहिजा भी 'हि' निस्सन्देह खातिर प्रयुक्त भइल बा। जतना भोग बा ऊ निस्सन्देह दुख के कारण ह। संसकिरित में एव, अपि आदि सबद 'भी' के अरथ में आवेला। ऊ कुल्ही निहचय से नजदीक आ जुड़ल बा। जइसे संसकिरित में एगो जुड़वाँ सबद चलेला 'एवमस्तु' एकर माने ह- 'ऐसा ही हो'। एहिजा भी 'ही' बिचारे जोग बा। गोसाईं जी अरण्य कांड में नारद जी के परथना पर असीस देत बाड़न - एवमस्तु मुनि सन कहेउ कृपासिंधु रघुनाथ। अब एहमें तनिको संदेह के जगहा नइखे। भोजपुरी में एकर अरथ कहल जाई-'अइसने होई'। एहिजा 'भी' के जरूरत नइखे लेकिन निहचयता से कवनो अंतर आवेके नइखे। अब ऊहो कहलन के बदला में कोई कहे- ऊ भी कहलन, ऊहो कहलन, का अंतरे बा ? संसकिरित नियन भोजपुरी में भी नामधातु जइसन संज्ञापद से क्रियापद बनावे के छमता बा। जइसे-'आत्मनः फलं इच्छति' खातिर 'फलीयति' से काम चलि जाला। ओइसहीं भोजपुरी में भी 'भी' आ 'ही' के काम चलि जाला आ ओहू से भी काम लिहल जाला।

रउँवा सुरसती के एक-एक इंच के बहुत उपयोग करींले। खासकर भाषा विज्ञान का क्षेत्र में सुरसती सबसे अलग आ विशिष्ट बिया। रउँवा एकरा के कवना मामला में अन्य पत्रिकन से अलग देखींले ? रउँवा का सोचिके सुरसती के संपादन शुरू कइलीं आ अभी तक लक्ष्य मिलल कि ना ?

सुरसती' निकाले के एगो खास परोजन रहे। पहिलहकी बात ई रहे कि भासा के सरूप आ भोजपूरी के प्रकृति पर केहू के धेआन ना रहे। जे जइसे लिखत रहे ओकरे के लिखे खातिर सभका के रहता बतावत रहे। भोजपूरी में बोलल आ लिखल दूनो कठिन काम रहे। भोजपूरी में खाली हिन्दी के सबदन के ले आके क्रियापद बदल

लिहल भोजपूरी मानल जात रहे। भासा के सबद के कोई भीतर से जानकार होखे तब नु भासा के प्रकृति बुझाई। लिखेवाला लोग शहर में बसि गइल रहन बाबा-दादा के समया से। गाँव छूटि गइल रहे। जे लिखे ओकरा के कहल जाय कि हिंदी के भोजपुरियावल बा। ई मनोवृत्ति ठीक ना लागल। फिर चलल कि देवनागरी ना भोजपूरी के लिपि कैथी होखे के चाहीं। भोजपूरी माई के रंथ के कुल्ही घोड़ा अपना -अपना दिसा में लेके भागल चहलन। हर भासा के पासे सबदे ओकर पहचान ह। ऊ बहुते दिन से रगड़ात-फगड़ात अपना रूप में आइल बा। अब जे भासा के प्रकृति आ बा ऊ कुल्ही भासा के अलगा-अलगा बा। भासा विज्ञान के नियम-कानून के छोड़िके अपना लेखन से ओकर नेम के ढाहे सुरू कर देलन। अँगरेजी के सबदन के भी लोग खुल के परयोग करे लागल। सधारन बात बा कि भोजपूरी श्लिष्ट भासा ना ह। संयुक्त सबद एह में ना होखे। लोग लिखे लागल। लोग कबीर के, तुलसी के आपन कवि मानत बा लेकिन उनकर भासा के रूप के अनुकरन नइखे करत। 'शब्द' के कबीर 'सबद' काहें लिखलन। शब्द लिखतन त केहू मारे लागित का ? नाहीं, हर भासा के आपन प्रकृति होला। मरद के जब मेहरारू के 'रोल' करे के होला तब ओकरा बनावटीपन देखार ना होखे, बरबरे इयाद रहेला। कवनो कवि के पहचान ओकर भसे बनेला। ओकरा काल, जात, वातावरण, संस्कार सभकर सीसा भसे ह। भासा के प्रकृति के पहचान बहुते कवियन के पढ़ला पर लउके लागेला। भासा विग्यान ओकरे छानबीन के सास्तर ह। कबीर नीअन कुल्ही संत साधक अपना चित्त के अनुभूति के गहराई भासा में गोंथ दिहलन। ना समुझे वाला के ऊ बात अटपट लागेला। जे अरथ के बूझि जाला ऊ उनका के महान भासा के जानकार मानेला। पहुँचल अदिमी के रहता के दुख कबो बुझइबे ना करे। सुरसती के परकासित कइके संपादकन के सूची लमहर करे खातिर हमार उद्देस ना रहे। लोग समुझो एह भासा के सकती के। नजदीक रहेवाला आदिमी के ओकर बिसेसता जलदी समुझ में ना आवे। चंदन के जंगल में रहेवाली भीलनी ओही के जलवना बनाके तापेले। हम खाली कविता कहानी छापल पत्रिका के उद्देस ना मानीं। पहिले के हिंदी जब अइसने इस्थिति से गुजरत रहे, ओकर इतिहास बतावत बा, कि भासा पर जरूर लिखात-पढ़ात रहे। महावीर प्रसाद द्विवेदी जी खुल के बहस करावत रहीं, खड़ी हिंदी कइसन होखे के चाहीं। ई अनुसासने भासा के सरूप बनवलस। हम भासा के संसकार के हर समय ओकर जरूरत

मानींला। पन्ना कमे रहे। ओकर सरूप आपन चिन्हानी खुदे होला। हीरा आपन भाव अपने ना बतावे। जौहरी जानेला आ बतावेला। हमरा लक्ष के पाता नइखे। हम त अपना भोजपूरी के सकती-समरथाय के दरसन कर लेलीं, दोसरका का करी, हम कइसे कह सकत बानी। एही पत्रिका के बल पर लेख, समीक्षा, कविता आ आलोचना लिखिके आपन बूता अजमवलीं आ पवलीं कि ई खाली बोली ना ह, भासा के कुल्ही गुन एकरा में बा। बोली त एहसे ह कि बोलेवाला लोग जादा बा, लिखेवाला लोग कम बा। भासा बनिके बोली संसकारित हो जाले, जवन काम भोजपूरी में ना भइल। मैथिली के संसकिरित के विद्वान संसकारित कइले। बोलेवालन से जादा लिखेवाला लोग भइलन। भासा बन गइल। संखेआ के बल पर कवनो दरजा दिआला, ऊ बहुत टिकाऊ ना होखे। जइसे लोकतंत्र में कवनो जात के आधार प सरकार बनाके, साले भर में दू गो चुनाव करावल जरूरी हो जात बा। भासा बोलला से ना बने, लिखला से बनेला, ओकर सरूप निरधारित होला। हमार लच्छ मिले के मतलब सभे के लच्छ मिलो। लच्छ ना मिलला पर आदमी के बस पच्छ मिलेला, पछपात करेला। हाला करी, हंगामा करी, अहथान मांगी आ अहथान पुछला पर जगहे ना बताई। एहसे जरूरी बा एह भासा के मजबूत करे के। ऊ आछा साहित्त देले पर मजगूती बुझाई। संत लोग के साहित्य, उनकर बात भिखारी के रचनन में कइसन फइलल बा। कोई पढ़े आ धेआन दे। कवना रूप में आके, ऊ जादा जनता के नजदीक गइल। एह से आगे बढ़े के चाही, आउरी चले के चाही। कुछ दूर बा हिमालय, हिम्मत करे चाही।

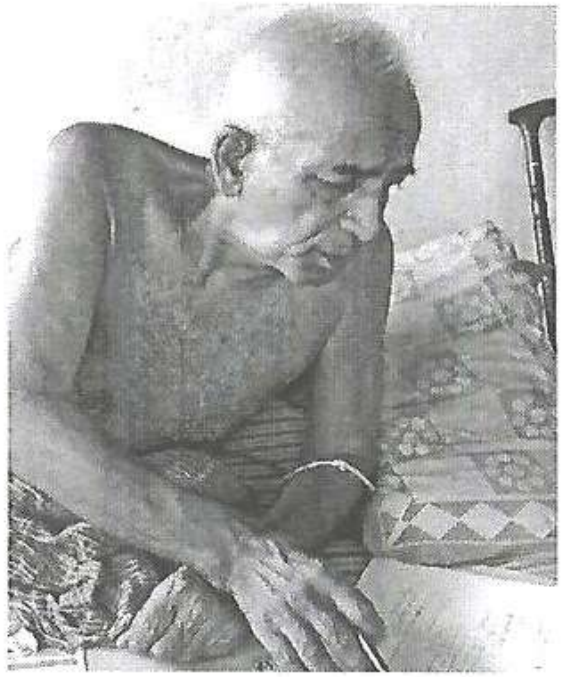

रचना कर्म में तल्लीन डॉ. नंदकिशोर तिवारी

लघुकथा

बहस

सीमा मिश्र

सभे एके परिवार के, बाकिर बिचार में कतना अंतर। बड़ी दिन के बाद आज सभ एके जगहा जुटल बा। हँसी-ठिठोली, बीतल दिनन के इयाद, सुख-दुख... सभ अपना-अपना मन के भँड़ास निकालत रहे। सब भाई-बहिन आ ओकर बाल-बच्चा जब जुटी, त धमाल त होइबे करी। अनुराधा का चेहरा पर हँसी ना रहे, कुछ परेशान लागत रही। ऊ ए घर के पतोहू हई। आखिर रीमा से ना रहाइल, पूछि दिहली-

का बात बा ? टेंशन में लागतारू ?

जानतानी ! काल्हु एकर जन्मदिन ह। हम कहतानी कि घरहीं में एकरा पसंद के खाना -पीना क दिआई, पूजा-पाठ क के जन्मदिन मना दिआई।

ठीके त सोचतारू।

बाकिर इहाँ सभे नु कहतानी कि मुहल्ला के लोग के ना पुछबू ? सभका किहाँ खइले बाड़ू त खिअइबू ना ? लोग का कहिहें ?

ई बताव कि लोग किहाँ तू कहे जालू कि अपना घरे जन्मदिन भा कवनो मोका पर हमरा के बोलइह ?

ना जी।

खाली हाथे जालू ?

ना जी, केहू मोका पर खाली हाथे जाई ? तब एकरा में खइले बाड़ू त खियावे के परी, ई कुल्ह कहाँ से आ गइल ? हमरा बच्चा के जन्मदिन बा। हमार मर्जी, जइसे मन करी ओइसे मनाइब।

रीमा के बिचार सबसे अलग रहबे करेला, एकरा चलते ऊ सबसे अलग-थलग लउकेली। आखिर मझिलकी बहिन बोले लगली-

तहार बात ठीक बा बाकिर समाज में रहे के बा त ओसहीं नु करे के परी ! आपनो मान प्रतिष्ठा बा कि ना !

बतकही अब बहस के रूप ध लेले रहे।

रीमा कहली- एकर मतलब समाज के देखावे खातिर हम आपन हैसियत भूल जाईं ? आदमी का अपना अवकाते में रहे के चाहीं। जब दू पइसा घट जाई नू त कवनो समाज तहार मदद करे ना आई।

ठीक बा, बाकिर करजो काढ़ि के मोका पर आदमी का खरचा करे के परेला।

बहस चालू रहे।

दंडक बन के कबंध

दिनेश पाण्डेय

राम के कबंध[१] से मुलाकात सीता के खोज में एक महत्त्वपूर्ण घटना रहे। कबंध के सहज अरथ रूंड, बेमाथ के धड़ होला। निघण्टु के अनुसार ई जलवाची ह।[२] निघण्टु के ई व्युत्पत्ति ऋग्वेद में आइल कबंध सब्द के संदर्भ में बा।[३] कं मुँह के अलावे देह, मन आ हरख आदि के वाचक ह, एन्हनि के बान्हे, गेंड़ देवे से कबंध। बाल्मीकि रामायण[४] में आइल कबंधकथा में कबंध के निरमान के पुरबिल कथा के संकेत बा। कबंध आपन कहनी अपनहीं कहता- ''पहिले हम महाबली आ सामरथी रहीं। हमार रूप कल्पना से बढ़के रहे आ तीनों लोकन में परसिद्ध रहे। पता ना कब आ कइसे, कवन भूत असवार भइल कि हम राछसी बेहवार[५] अपना लिहनीं। राछस[६] सरूप में रिखि[७] लोगन में खूब आतंक पसारीं। एक बेरि का भइल कि हम स्थूलशिरा[८] नाँव के रिखि के बहुते तंग क दिहनीं जिनकर सराप से हमरा कुरूपता परापत भ गइल। कबंध के ई खुदबयानी बेकती के स्तर प कवनों बिचारधारा के फुटन, उठान आ अंत में अतिवादी बिचार के रूप में ढल के भद्दा हो जाए के साफ संकेत देता। कबंध के मनबढ़ू होखे के पीछे ओकरा दीरघजीवी होखे के ब्रह्माजी के दिहल बरदान रहे, जेकर बिपरीत असर से ऊ निरभयता के अतिरेक से भरि गइल रहे। ओकर हिम्मति अतिना बढ़ल कि ऊ इनर राज से बिरोध क बइठल आ उनुकर बज्जर के मार खा के भौंड़ा भ गइल।[९] वैदिक साहित्य में जलवाही मेघ के उत्पत्ति, संचरन, महन, बरिसन में 'इन्द्र' के भूमिका के चर्चा सगरे बा, एहसे इनरराज के बज्जरमारी से कबंध में उथल-पुथल भा हँड़होर मचल बिलकुल सुभाविक बात बा। खैर, रूपकत्व के ऊ स्तर एह से अलग बा। इहाँ इन्द्रिय-सामरथ के नकारात्मक प्रयोग आ तेकर असर से बेकति भा समाज में उपजल विरूपता से सड़हति सटीक बा। एह प्रसंग में 'स्थूलशिरा' कम बहुरूपिया नइखन। मोट नस, ऊ चाहे देह के होखे, चाहे समाज के, ओ से छेड़छाड़ आ बिरोध महँग पड़बे करी। नस के भूमिका जबर बा, ऊ दिमाग के नस होखे, हिरदय के भा जाँघ के। सको ना आलोकधन्वा आदिमी से बचे के सलाह एही वजह से दिहले बाड़ें कि तेकर जाँघ के सबसे पातर नस में सब्द सुरू होके जाँघ के सबसे मोट नस में खतम हो जाला। अब स्थूलशिरा

का जगह आठ टेंढ़े टेंढ़ अष्टावक्र के रख दिहल जाव त ओ से कवनों फरक ना पड़ी, नस कवनों सोझ थोडे होला? टेढ़िया से रार लेला के कुपरिनाम का होला ई जग जाहिर चीझ ह।

दोसरकी कथा में कबंध के 'दनु' मानल गइल बा।[१०] ऊ उग्र तप क के ब्रह्माजी से चिरंजीवी होखे के बरदान पा लिहलें। बरदान से पावल अभय का वजह से कबंध में अहं के अधिकाई पैदा भ गइल आ ऊ इन्द्र से रार ले लिहले। इन्द्र से ठानाठुनी मँहगा पड़ल, बज्जर के चोट से उनकर सिर धड़ में धँस गइल। ब्रह्माजी के बरदान के रछया बदे इन्द्र उनुका के एक जोजन लमहर भुजा दे दिहले आ लादे में मुँह बना दिहले। 'भट्टिकाव्य' आ 'रामायण ककविन' में कबंध के श्री नाँव के दनु के बेटा कहल बा जवन कवनो दिन दारू पीए के असर से एगो मुनि के अनादर क के सरापित भ गइल।[११] 'महावीर चरित्र' में कबंध राम के आपन परिचे देत कहत बा-

दनुर्नाम श्रियः पुत्रः शापाद्राक्षसतां गतः।
इन्द्रास्त्रकृत काबन्ध्यः पूतोऽस्मि भवदाश्रयात्।

(हम श्री नाँव के दनु के बेटा हईं जवन सराप से राछसता पा लिहनी, इन्द्र के कोप से हमरा काबन्ध्य भेंटल अब राउरि आसरे पाके हम पबित्तर भ गइनी।) 'महाभारत' के 'रामोपाख्यान' के अनुसार बाँहि कटला के बाद कबंध जमीन प गिर गइल आ ओकर धुआ (शव) से दिब्ब पुरुस उतपन्न भइल जवन आकास में ठाढ़ होके आपन परिचे दिहलसि कि ऊ विश्वावसु नाँव के गंधर्व ह जवन ब्रह्मा के सराप से राछस बनि गइल रहे।[१२]

आध्यात्म रामायण[१३] आ आनन्द रामायण[१४] में आइल कथा के अनुसार कबंध एगो रूप-जवानी के गरब से भरल गंधर्वराज रहे जवन ब्रह्मा से अबध्य होखे के बरदान पाके अहंवादी भ गइल। बाद में कबो अष्टावक्र के उपहास करे के कारन सरापित होके राछस बनि गइल। आनन्द रामायण में आइल एगो अगते के घटना के उल्लेख के अनुसार दंडकबन में राम के हत्या बदे रावन के पेठावल सोरहगो राछसन के भछ जाएवाला कबन्धे रहे।[१५] कृतिवास रामायण[१६] में ओकरा के कुबेर नाँव के दैत्य[१७] बतावल गइल बा। मातंग आश्रम के नगीची वन के भयावहता के अंदाज दुनो भाई के अगते से रहे। सघन बन, हिंस्र जीआजंतु से भरल रहे। बृकोदरी, मुक्तकेसी अयोमुखी से टकराव ओह इलाका के माहौल के बहुत कुछ ज्ञान दे चुकल रहे। अयोमुखी के लछुमन से बेगर परिचे-पाँती के सीधे उन्मुक्त भोग के प्रस्ताव राछसी संस्कृति में लोकमर्यादा आ नैतिकता में गिरावट के सबूत रहे। मातंग आश्रम के

बिरान होखे आ उहाँ से रिखिमुनि लो' के पराए के पीछू साइद इहे सभ वजह रहन। दरअसल अयोमुखी कवनों बेकती के नाँव ना ह, मत्स्य पुराण[१८] के अनुसार ई मन से जामल कवनो अपशक्ति हई, जे अंधक नाँव के राछसन के रकत से पोख-पोढ़ाली। ई बिधिन के मेहरारू हई। श्वेताम्बर जैन परंपरा में बिधिन राछसन के एगो वर्ग मानल गइल बा।

रामायण के कथा में कबंध के पइस के एक अजीबे पृष्ठभूमि बा। एक परचंड आन्ही अस फैलाव, समूचे बनप्रांतर में भयंकर प्रतिधुनि ब्यापित बा, अलगल छाती, मस्तक आ घेंटी के अभाव, पेटे में मुँह के रचना, ई कवनों विचारधारा बिसेखी के रूपक त ना ह, जवन आपन पुरहथ गति से सारा बाताबरन के छाप लिहले होखे? जहवाँ अहम आ तागते पुरधान होखे, जहाँ बुद्धि, बिबेक, बिचार आ काकु (भावात्मक संवेग से कंठसुर में आइल बदलाव) के मरजाद खतम हो गइल होखे, जहवाँ पेटे मुख हो गइल होखे? एकरा के परतच्छ आ हमलावर देखि के लछुमन एगो फौरी समाधान रख दिहलें- ''ई नीच हमनीं के चपेट में ले लेवे ए से अगते तरुआरि से एकर लमहर बाँहि काट दिहल जाव।''

त्वां च मां च पुरा तूर्णमादत्ते राक्षसाधमः।
तस्मादसिभ्यांस्याशु बाहू छिन्दावहे गुरू।[१९]

इहाँ 'असि' (अस्+इन्) सब्द बिचार जोग बा। अस् धातु परितेआग, वापिस मोड़े भा रद्दी में डाल देवे के बोधक ह।[२०] एकर परोछ-सुर ई बा कि ई राकस हाबी होखे एसे अगतहीं एकर उलटबिधान क लिहल जाव।

कबंध अफरात बौद्धिकता के प्रतिनिधि ह। ऊ मूल रूप से एगो गंधर्व रहे।[२१] तीनोंलोक में अइसन कवनों वस्तु भा ज्ञान ना रहे जेकरा से ऊ अनजान होखे-

नहि तस्यास्त्वविज्ञातुं त्रिशु लोकेशु राघव।
सर्वान्परिसृतो लोकानपुराऽसौ कारणान्तरे।।[२२]

जवन राक्षसी विचारधारा के असर से मानुस के अनिवार गुन जवना में सिर के भूमिका मुख ह, गौण परे आ उदरलोक के अहमियत देवे का ओजह से अजीब बदसूरत शक्ल में ढल चुकल रहे, जहवाँ सारा सांसारिक लगाव पेटे के अलमें चलेला। ओकर देहधजा, कदकाठी में अलगल माथा आ घेंची अवरि पेटप्रधान धड़ केहू के ध्यान खींचेवाला अंग रहन।[२३] चट्टान अस देह, रोंआँ काँट अस, बोले त घनगरज, लाल चढ़ल-चढ़ल, सतर्क आ हिंस्र आँखि, दीरघ मुँह, रह-रह के ओठ चाटे, ठीक नसेड़ी जइसन। कबंधके देह रचना के प्रतीकात्मकता में तेकर बाँहि के प्रमुख भूमिका बा। लमहर बाँहि के जोजन भर- योजनमायतौ- फैलाव। ई

निसन्देह कबंध के आपन कर्मछेत्र से जुड़ाव आ परभाव के विस्तार के सूचक ह।[२४] काज के झट से खतम क देवे के कारन से भुजा के नाँव बाहू ह।[२५] लछुमन के ई उकित बिचारे जोग बा कि हतहत डीलडौल वाला ई भयगर राछस आपन बाहूबल से तीनों लोक के जीते आ हमनियों के मार डाले के चाह रखत बा।[२६] राम द्वारा कबंध के बाँहि काटल (कर्म-साधन, सहयोग के सोत आ मतप्रसार के अवरोधन, उच्छेदन) आ अगिनदाह (ज्ञानअग्नि से परिशोधन) अजगुत घटना बाड़ीसन् जवना से कबंध मूअत नइखे बलु ओकरा में अतिना जोग्यता आ जाता कि ऊ राम के बौद्धिक सहायता[२७] - मतिसाचिव्यं- देवे में समर्थ हो जाता। ओकर खुद के तिरिसा इहे बा कि बेगर एह आग में तवले ओकरा में अइसन तागत ना आ सके- अदग्धस्य तु विज्ञातुं शक्तिरहित न मे प्रभो।[२८] कबंध के लाद के मेद जरि गइल होखे जइसे- मेदसा पच्यमानस्य मेदं दहति पावकः।[२९] अब ऊ हंसजुत, ऊजर, तेजस बिमान-विमाने भास्वरे तिष्ठन्हंसयुक्ते यशसस्करे[३०] - प असवार रहे। ई 'हंसजुत भास्वर बिमान' निसन्देह ज्ञान के उचहन अवस्था से अरजित तेज, नीर-क्षीर विवेक आ इरिखा बिहूनता के बोधक ह। ।

परिवर्तित कबंध के बतावल राह ई ह-

श्रृणु राघव तत्त्वेन यथा सीतांवाप्स्यसि।
राम षडयुक्तयो लोके याभिः सर्व
विमृश्यते।[३१]
परिमृष्टो दशान्तेन दशाभागेन सेव्यते।

(सुन· राम, हम ऊ छव तत्त्व कहत बानीं जवना से सीता वापिस हो सकेली। लोक में छव जुगुती बा, जवना से सभकुछ पावल जा सकेला। एगो हीन हालत बेकती के समान हालत के बेकती से बेहतर सहजोग मिल सकेला।)

कहे के सबब नइखे कि आगे राम के सारा जतन एही छव जुगुती के आसरे रहे। कबंध के बतावल इहे छव जुगुति- संधि, विग्रह, यान, आसन, द्वैधीभाव आ समाश्रय- आगे राम के पाथेय बनल। ''एगो पीड़ित प्रानी दोसरका पीड़ित के मददगार हो सकेला''- कबंध के कथन के इहे निचोड़ रहे। किष्किंधा आ 'ऋष्' परबत के तराई के बासिंदा बानर-रीछ जाति के सांस्कृतिक, सामाजिक, आ राजनैतिक स्थिति के गुन, सुभाव आ नय वगैरह के गहिरा ज्ञान राम के देवेवाला कबन्धे रहे, जवन उनुका खाती बहुते काम के साबित भइल।

कबंध आगे जवन बतवलसि एसे तेकरा के 'अरथवान'- वाक्यमन्वर्थमर्थज्ञ[३२]- कहल गइल बा। ई सारा बतकही एक प्रतीकात्मक भा कूट संवाद अस लागत बा। कबंध पूरा विवरण देवे के मूड में रहे त अबाध बोलते चलि गइल- ''राम, तहार आगे के

राह कल्यान के आ फूल बिछल बा। ई फूल-फर-तरुअरि पछिम दने देखले नजर अइहें। इन्ह तरुअन प चढ़ि के अमरित अस सुस्वादू फर खात दुनहुन चलि जइह । एह तरुवन के पार कइले 'नन्दन' आ 'उत्तरकुरु' (संसार के नौ भाग में से एक, उत्तरकुरु लोगन के देश) अस वन मिली, जे में 'चित्ररथ'(कुबेर के बाग) जइसन सभ मउसम में फरे से फेंड़ नवल रहेलें। एही तरे के कतिने ना वनप्रदेश पार कइले पम्पा नाँव के सरोवर मिली। एहि झील का भीतर ना सेवार होखे ना कंकर, कछार प बिछिलहटो ना होखे। तली में बढ़िया रेत बा आ ओमें कुईं खिलले रहेलें। राम, उहाँ हंस, राजहंस क्रौंच आ सारस के भरमार बा। ऊ बधिकता से अनजान होखे से कवनों अदिमीं से डेरास ना। हे राम तु घिऊहे पिंडी जइसन थुलथुल इन्ह पखेरुअन आ रोहू, चक्रतुंड (बोल सुइलार मुँह के मछरी) आनड नाँव के मछरी, जेकर पाँख ना होखे, भूँज के खइह·। चोइँटाही आ ढेर कँटीली उम्दा मछरिन के काँट से छेद-सेंक के खइह·। लछुमन तोहिके पम्पा के कुइँवासित, रोग-पापहर, आनंददायक, झकझक पानी भर-भर दोना ले आके पीअइहें। पहाड़ी खोह में सुते वाला सूअर बैल अइसन डँकरत पम्पा किनारे पानी पीए आवत लउकिहें।राम, दिन ढलले घुमतखने बड़हन डाढ़ि के फूल से लदरल फेंड़न आ पम्पासर के देखि के तहार बिखाद हर जाई। फूल त हुहाँ अनघा बाटे बकी केहू माली नइखे। हुहाँ के फूल ना, मुरुझस ना टपकस। उहाँ मतंग रिखि के चेला लोग एकाग्रचित्त रहत रहन। जब ऊ गुरू बदे फूल-फर ले आवे जास त श्रम-बून झरे। उनुकर तप के असर से पसेना फूल हो जाय। अब ऊ लोग त हुहाँ से चलि गइल बकी मतंग के परिचारिका 'श्रमणी' शबरी उहँईं रहेली। संन्यासिन, बुजुर्ग आ वंदनीय शबरी राउरि दरसन के बाद स्वर्ग चलि जइहें। पम्पा के पछिमी किनारे एगो अतुल आ दुरगम आश्रम बा। मतंग रिखि के बेवस्था से ओहि बन आ परबत प्रांत में अधिकाई होखला के बावजूद हाथी भा क्रूर अत्याचारी (नागा:) ओहि आश्रम के बिधंस ना कर सकस। ऊ बन मतंगबन के नाँव से बिख्यात बा। उहाँ कयि तरे के पंछी रहेलें तूहूँ निहचिंत होके बिहरिह·। पम्पा के सीधे फुलदार बिरिछन से सँवरल ऋष्यमूक नाँव के पहाड़ बा कठिन चढ़ाई वाला ओह पहाड़ के रखवारी हाथी करेलें। उदार ब्रह्माजी ओहि पहाड़ के खुदहीं बनवले रहनीं। केहू ओहिके चोटी प धन के सपना देखे त बूझीं कि जगलो प उहे पाई, मतलब जे उहाँ हर कामना पूर्ति के जोग बन जाला। केहू पापी उहाँ जाइए ना सके, जदि चलि जाय त सुतले

में राछछ मारि घलिहें। उहाँ हाथिन के चिघाड़ अक्सर सुनाई देला।

राम, पम्पा में मतंगबन के वासी मनबहलाव करत रहेलें। ऊ सब लोहित मद से तर कबो समिलाते त कबो अलग-अलगे बिचरे लें। उनुकर करियठ मेह अइसन बलवान देह होखेला। ऊ पम्पा में कबहूँ ना घटेवाला निरमल शीतल जल पी के आपन पियास मिटावेलें। रीछ, बाघ, नीलमनी के आभा के रुरूमिरिगन के देखते तोहन लो के दुख मिट जाई। उहाँ एगो बड़हन पहाड़ी खोह बा जवना के मुँह चट्टान से बन रहेला, तेकर भीतर गइल बड़ कठिन बा। खोह के मुहाना के सामने ठंडा जल के सरोवर बा, उहाँ समृद्ध बनसंपदा बा तहवें चारि गो बानर सङे सुग्रीव रहेलें। कबो-कबो ऊ पहाड़ी के चोटी ओरि जा बइठेलें। सुग्रीव के मिताई तोहन लो' के बहुते लाभकारी होखी।

कबंध आकास में मालाधरी सूरुज अस रूचत रहे। राम-लछुमन कहलें कि हे बड़भागी, अब तू आपन काम में -'तं तु खस्थं'[३३] - ज्ञान, कर्म, स्वर्ग, आनंद आदि में मगन होख·, हमनियों आगे चलीं। ऊ लोग कबंध के बतावल राहि प पहाड़ी ढलान का राहि धइले पम्पा के पछियारी किनारे शबरी के आश्रम का ओरि चल दिहलें।

एह प्रकरण के सिद्धि ई ह कि पेट के पकड़ से निकल के ज्ञान के उच्च अवस्था के पवले में मानव आ मानवता के भलाई बा। बौद्धिक आ शैक्षणिक बिकास अउरि जीवन के जथारथ के उपयुक्त ज्ञान सुनहरा सरग के दुआर खोल देला।

संदर्भ सूची-

१. कबंध (कं मुखं बध्नाति-क+बन्ध+अन्), संस्कृत हिन्दी कोश, वामन शिवराम आप्टे।

२. निघण्टु, अध्याय-१, खंड-१२

३. त्रीणि सरांसि पृश्नयो दुदुहे वजिणे मधु उत्सं कबंधमुद्रिणम। -ऋग्वेद ८.७.१० (सूर्य किरिन तीनि सरोवर सरीखा भुईं, अंतरीछ आ बाहरी आसमान से मधुजल ले के मूल उत्स से उठल बज्जरधारी मेघ के जरिए देवेला।)

४. बाल्मीकि रामायण, अरण्य काण्ड, सर्ग - ६९-७३

५. सिद्धांत में लोकरक्षक, व्यवहार में अतिवादी, आततायी।

६. राक्षस (रक्षस्+ इदम्- अण्) राक्षस से संबंध रखनेवाला, निशाचर स्वभाव का, शैतान- आप्टे कोश।

७. ऋषि (ऋष्+इन+कित्) अंत:स्फूर्त विचारक, मंत्रद्रष्टा - आप्टे कोश।

८. स्थूलशिरा (स्थूल+अच्+श्+क+टाप्) मोटी नाड़ी, एक ऋषि।

९. बाल्मीकि रामायण, अरण्य काण्ड। सर्ग - ७१ श्लोक २-७ कामिल बुल्के के अनुसार प्रक्षिप्त अंश।

१०. बाल्मीकि रामायण, अरण्य काण्ड ७१.७, ७१.२०

११. भट्टिकाव्य - ६.४८, रामायण ककविन - ६.७५

१२. महाभारत - ३,२३,२५-४३

१३. आध्यात्म रामायण - ३,१

१४. आनन्द रामायण- सारकाण्ड, सप्तम सर्ग श्लोक १५१-१६१

१५. समंत्र्य रावणेनापि राक्षसांश्चैव षोडश।
प्रेषिता रामघातार्थं ते कबन्धेन भक्षिता।
-आनन्द रामायण, सारकाण्ड - ७.२०

१६. कृतिवास रामायण - ३.२८

१७. दिति+ण्य, दैतेय, दिति के पुत्र राक्षस - आप्टे कोश।

१८. मत्स्यपुराण- १७९.८

१९. बाल्मीकि रामायण, अरण्य काण्ड, सर्ग - ७० श्लोक-४

२०. आप्टे कोश।

२१. गंधर्व (गंध+अर्व+अच्), अर्ध देवों का एक वर्ग।-आप्टे कोश ।

२२. बाल्मीकि रामायण, अरण्य काण्ड, सर्ग - ७१.३३

२३. विवृद्धंशिरोग्रिवं कबंधमुदरेमुखम्।
बाल्मीकि रामायण, अरण्यकाण्ड- ६९.२७

२४. योक्राणि योजननीति व्याख्यातम्। - निरुक्त ३.९

२५. बाहू कस्मात् प्रबाधत आभ्यां कर्माणि - निरुक्त ३.८

२६. भीषणोऽयं महाकायो राक्षसो भुजविक्रम।
लोक ह्यातिजितं कृत्वा ह्यावा हंतुमिहेच्छति । बाल्मीकि रामायण, अरण्य काण्ड, ७०.५

२७. बाल्मीकि रामायण, अरण्य काण्ड ७१.१९

२८. ऊहे, ७१.२८

२९. ऊहे, ७२.३

३०. ऊहे, ७२.६

३१. ऊहे, ७२.७-८

३२. ऊहे, ७३.१

३३. ऊहे, ७३.४३

भोजपुरी बोलीं, लिखीं आ पढ़ीं

गीत

रामरक्षा मिश्र विमल

1

ना होखे बरदाश
करे छटपट मन
गीत बनल।

बिजली के तेजी मचले
ना डेग रहे धरती
हरियाए लागे चिंतन के
मरुआइल परती

सम्मत जरते
ताल ठोकाइल
हिरदे प्रीत भरल।

समहुत के सपना टूटल
अँधियारा मन में अब
प्रभुता के धरती सिकुरल
जिनिगी खुद से गायब

पँवरे अब बिशवास
सनेहिया तक
पानी पइसल।

2

ओठे पपरी
लाख दिलासा
खाइबि तब जानबि।

एको कवर गइल सुबहित ना
मन पँवरे सगरी
राह कठिन ओठन पर मुसकी
माथ भरल गगरी।

कइसन कजरी
कइसन फगुआ
गाइबि तब जानबि।

पानी नियन बहल पइसा
बबुआ मन से पढ़ले
माई बाबू सङ मन में
दुनिया नवकी गढ़ले।

गरदन फँसरी
तेज दउड़ बा
जाइबि तब जानबि।

समता का मकुनी में
सुंदर बइमानी पूरन
हरिआए मन छिरकइला पर
जिनिगी के चूरन।

बरिसे बदरी
चानी सोना
पाइबि तब जानबि।

किताबि : एक नजर में

भिहिलात बतासा जइसन भगवती प्रसाद द्विवेदी के समकालीन भोजपुरी कहानी संग्रह हटे,जवना के प्रकाशन 2018 में हिंदुस्तानी एकेडमी, 12 डी, कमला नेहरू मार्ग, इलाहाबाद-211001 से भइल बा। एकर कीमत 115रुपया बाटे। एह संग्रह के मए कहानी बिल्कुल जमीन से जुड़ल लागतारी सन।

बरमूदा त्रिकोन कथाकार कृष्ण कुमार के 11 गो कहानियन के संग्रह बाटे, जवना के प्रकाशन 2012 में सावित्री शिक्षा सदन,महावीर स्थान के निकट, करमन टोला, आरा - 802301 से भइल बा। एकर कीमत 200 रुपया बाटे। एह संग्रह में कथाकार अपना समय का निर्मम यथार्थ के संवेदना के जमीन पर रचे के चुनौती सँकारत लउकता। कहानियन में प्रयुक्त शब्द भीतर गुदगुदावत लागतारे सन।

मुट्ठी भर भोर डॉ. अरुणमोहन भारवि के भोजपुरी कहानी संकलन हटे,जवना के प्रकाशन सन् 2013 में अरुणोदय प्रकाशन, आर्य आवास, भारतीय स्टेट बैंक (मुख्य शाखा) के सामने, बक्सर-802101 (बिहार) से भइल बा। एकर कीमत 300 रुपया बाटे आ 120 गो पन्ना बा।एह कहानी संकलन में 24 गो कहानी आ लघुकथा के संकलन बा। भारवि जी वरिष्ठ कहानीकार हईं। इहाँ के कहानियन में सृजनात्मक क्षमता आउर किस्सागोई के बेहतर रूप के दर्शन होला।

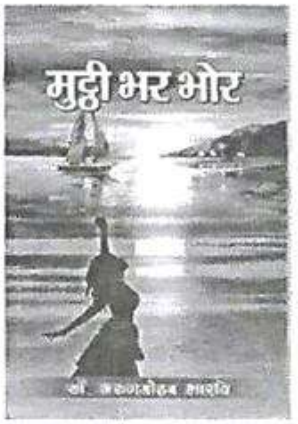

तीन डेगे त्रिलोक गंगा प्रसाद 'अरुण' के भोजपुरी हाइकु संग्रह हटे, जवना के प्रकाशन सन् 2013 में सिंहभूम जिला भोजपुरी साहित्य परिषद्,कृष्णा भवन, विवेक नगर,छोटा गोविंदपुर, जमशेदपुर-831015 से भइल बा।एकर कीमत 100 रुपिया बाटे।मानवीय संवेदना के गीतकार अरुण जी के हाइकु भी इहाँके गीते नियन प्रभावशाली बाड़े सन। एगो बानगी-

कहल जाला/गदहो के बाप/काम परले

किताबि : एक नजर में

मातृभाषाई अस्मिता बोध डॉ. जयकांत सिंह के भोजपुरी मातृभाषा चिंतन पर एगो प्रबंधात्मक पुस्तक बिया, जवना के प्रकाशन सन् 2016 में राजर्षि प्रकाशन, मुजफ्फरपुर - 842001 (बिहार) से भइल बा।एकर कीमत 51 रुपया बाटे।ई किताब तीन भाग में बिया- भूमिका,मातृभाषा शिक्षा के औचित्य आ मातृभाषाई अस्मिता बोध।

लेखक मानऽतारे कि हमरो मातृभाषा भोजपुरी महान भारतवर्ष का तद्भव संस्कृति के परिचायक अति प्राचीन लोक बेवहार के भाषा ह, जेकरा पाले लोक-शिष्ट साहित्य के अकूत भंडार बा।

जिनिगी पहाड़ हो गईल डॉ. गोरखनाथ 'मस्ताना' के भोजपुरी कविता संग्रह हटे, जवना के प्रकाशन सन् 2008 में इंद्रप्रस्थ भोजपुरी परिषद्, RZH/940, राज नगर-2, पालम कॉलॉनी, नई दिल्ली- 110045 से भइल बा। एकर कीमत 200 रुपिया बाटे।भोजपुरी कविता के रंगीन चुनरी के रंगरेज मस्ताना जी के मए कविता पढ़े आ गुनगुनाए जोग बाड़ी सन। अभावो में भाव के सर्जना करेवाला एह कवि के मस्ती में कतहीं कमी नइखे लउकत।

भिखारी ठाकुर के भक्ति भावना में लोक मंगल के आयाम रामदास राही के एगो निबंधात्मक पुस्तक हटे, जवना के प्रकाशन सन् 2015 में मंगला रामेश्वरा प्रकाशन, ग्राम- सेमरिया, पो. बड़हरा जिला-भोजपुर (बिहार) 802311 से भइल बा। एकर कीमत 30 रुपिया बाटे।एह किताब में रामदास राही जी भिखारी ठाकुर का भक्ति भावना में लोक मंगल के विभिन्न आयामन के खोजे के भरपूर कोशिश कइले बानी। ई किताबि शोधार्थी लोगन खातिर निस्संदेह उपयोगी साबित होई।

माया माहाठगिनि डॉ. गदाधर सिंह के भोजपुरी ललित निबंध संग्रह हटे,जवना के द्वितीय संस्करण के प्रकाशन सन् 2013 में निलय प्रकाशन, वीर कुँअर सिंह विश्वविद्यालय परिसर, आरा, भोजपुर (बिहार) से भइल बा. एकर कीमत 100 रुपया बाटे आ एहमें 120 गो पन्ना बा।एह ललित निबंध संग्रह में लेखक के 14 गो ललित निबंध बाड़े सन।एकर गिनती उत्कृष्ट,अनूठा आ पठनीय निबंध संग्रह में कइल जाएके चाहीं। डॉ. गदाधर सिंह के नाँव सबसे पुरान जीवित लेखकन का पीढ़ी में भाषा आ साहित्य के जानकारन में लियाला।

किताबि : एक नजर में

आरोही रचनावली भाग-1 चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह 'आरोही' के मए कहानियन आ लघुकथन के संग्रह हटे। एकर संपादक जितेंद्र कुमार आ प्रबंध संपादक कनक किशोर हईं। 480 पन्ना के एह किताबि के कीमत बा 320 रुपया। एकर प्रकाशन आरोही स्मृति संस्थान, भोजपुरी सदन, बजाज शो रूम की गली, पकड़ी आरा से भइल बा। एहमें 63 गो कहानी आ 51 गो लघुकथा संग्रहीत बाड़ी सन।

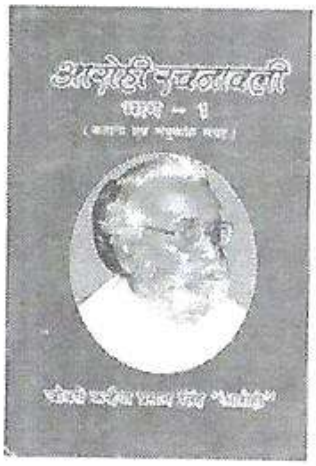

जिनिगी रोटी ना ह केशव मोहन पांडेय के भोजपुरी कविता संग्रह हटे। एह किताबि के प्रकाशन 2017 में नवजागरण प्रकाशन, ए-3, विकास कुंज एक्स., विकास नगर, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059 से भइल बा। 88 पन्ना के एह किताबि के दाम बा 250 रुपया। कवि के कहनाम बा कि उनुकर कविता उनुकर थाती हटे माई के बान्हल गाँती नियन। किताब के कागज आ गेट अप स्तरीय आ लोभावन बाटे।

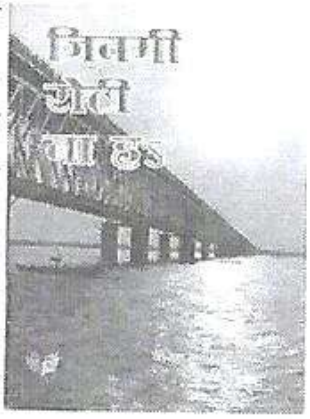

खरकत जमीन बजरत आसमान डॉ. ब्रजभूषण मिश्र के भोजपुरी काव्य-संग्रह हटे। एकर प्रकाशन 2015 में वनांचल प्रकाशन, तेनुघाट साहित्य परिषद्, सिंचाई कॉलोनी,तेनुघाट-1, जिला- बोकारो(झारखंड) से भइल बा। 128 पन्ना के एह किताबि के कीमत बा 150 रुपया। समूचा काव्य संग्रह पाँच खंड में बाँटल बा- मुक्त छंद, तितकी, हाइकू-सेरेर्यू, गीत-जनगीत आ दोहा। एह संग्रह के कवितन के जड़ लोक का माटी में गहिराह पसरल लउकता। किताबि के गेट अप आकर्षक बा।

जबरी पहुना भइल जिनगी जयशंकर द्विवेदी के भोजपुरी संग्रह हटे। एकर प्रकाशन हर्फ मीडिया, बी4, ग्राउंड फ्लोर, सेवक पार्क पटेल गार्डेन एक्स्ट. द्वारिका मोड़, नई दिल्ली -110059 से भइल बा। 2018 में प्रकाशित 104 पृष्ठ के एह किताब के कीमत 200 रुपया बाटे। बहत्तर गीतन का एह संग्रह में जहाँ संयोग आ वियोग श्रृंगार के गीतन के अउलई लउकताटे, ओहिजे कबो करुण आ कबो हास्य रस से भी मनफेर होत चलऽता।

किताबि : एक नजर में

'विविधा' पांडेय कपिल द्वारा संपादित भोजपुरी पत्रिकन के संपादकीय आलेखन के संग्रह हऽ जवना के प्रकाशन भोजपुरी संस्थान, 3/9, इंद्रपुरी, पटना-24 से अक्टूबर, 2011 में भइल बा। 482 पृष्ठ के एह किताबि के कीमत बा 1200 रुपया। भोजपुरी साहित्य के एह संदर्भ ग्रंथ के 1975 से 2001 तक के 26 बरिस के भोजपुरी साहित्य आ संस्कृति के धड़कनो का रूप में देखल जा सकता।

'हमार पहचान' जलज कुमार अनुपम के भोजपुरी कविता संग्रह हटे जवना के प्रकाशन हर्फ मीडिया, बी4, ग्राउंड फ्लोर, सेवक पार्क पटेल गार्डेन एक्स्ट. द्वारिका मोड़, नई दिल्ली-110059 से भइल बा। 2018 में प्रकाशित 102 पृष्ठ के एह किताब के कीमत 200 रुपया बाटे। कवि भूमंडलीकरण के एह दौर में अपना पहचान के बचावल चाहता। ओकर पहचान ओकर भाषा आ ओकर संस्कृति बा। एह आशावादी कवि के कवितन के जरूर पढ़ल जाएके चाहीं।

के हवन लछुमन मास्टर भोजपुरी के सशक्त हस्ताक्षर कृष्ण कुमार के उपन्यास हटे, जवना के प्रकाशन सन् 2018 में अरुणोदय प्रकाशन, बक्सर-802101 (बिहार) से भइल बा। 176 गो पन्ना के एह किताबि के कीमत 200 रुपया बाटे। एह उपन्यास के नायक लछुमन मास्टर एगो ईमानदार,कर्मठ आ सक्रिय व्यक्तित्व के मालिक बाड़न। समूचा गाँव उनुका से प्रभावित बा आ एहसे पिछड़ल गाँव के कायाकलप होखे लागता। खाँटी गँवई शब्दन के प्रयोग आ कथागोई के लेखक के आपन मौलिक शैली शुरू से अंत तक बन्हले रहता।

गुलरेज शहजाद लिखित **चम्पारन सत्याग्रह गाथा** 2018 में हर्फ़ मीडिया, नई दिल्ली-110059 से प्रकाशित बाटे। एह प्रबंध काव्य के कीमत 150 रुपया बा। निस्संदेह, ई प्रबंध काव्य ऐतिहासिकता आ सहज अभिव्यक्ति का कारन आवेवाला दिन में बहुत लोकप्रिय होई।

लेखक लोगन से निहोरा

1. कृपा करके **सँझवत** में प्रकाशनार्थ आपन शोध निबंध भा कहानी मंगल फांट (यूनिकोड) में टाइप कइके ओकर वर्ड फाइल भेजीं।

2. पीडीएफ भा वर्ड फाइल पर विचार ना होई।

3. रचना का सङे अपना हाथ से लिखल आ हस्ताक्षरित एगो घोषणा पत्र (असंपादित स्कैन प्रति) जरूर भेजीं, जवना में ई स्पष्ट कइल गइल होखे कि ई रचना राउर आपन मौलिक आ अधिकृत रचना हटे आ एकरा के रउँआ 'सँझवत' में प्रकाशनार्थ भेज रहल बानी।

4. समीक्षा खातिर किताबि भेजे से पहिले एक बेरि अपेक्षित पता के जानकारी मेल भा फोन का माध्यम से जरूर ले लीहीं।

5. संपर्क : मोबाइल : 9051540846
(सायं 5 बजे से 9 बजे तक)
ई मेल : sampadaksanjhavat@gmail.com

लोक संस्कृति बचावे के एगो बरियार कोशिश

समीक्षक : दिलीप कुमार ओझा

जिनिगी के निचोड़ साइत एही बात में बा कि बिगड़ल से बिगड़ल बात के कइसे बना लिहल जाय। ओकर तरीको सभ्यता-संस्कृति का अनुरूप होखेके चाहीं आ ई सिलसिला चलत रहेके चाहीं काहेंकि स्थापित सुसंस्कृत-सामाजिक मूल्यन के दरकिनार करके पूँजीवाद आपन वैश्विक उत्पाद देला पइसा खातिर। ओकरा एह बात के फिकिर ना होला कि एकर अंजाम का होई। संस्कृति विकृत हो जाउ भा सभ्यता मिट जाउ, पूँजीवाद के कार-बार चलत रहेके चाहीं। लोककथा मिट जा सन बाकिर सिनेमा पर आँच ना आवेके चाहीं, धारावाहिको ना थथमेके चाहीं। कारन साफ बा। लोककथा पइसा ना देली सन, संस्कार देली सन, शिक्षा देली सन। सिनेमा-धारावाहिक पइसा देला, भलहीं इनकर तत्त्व मानसिक विकृति पैदा करत होख सन, एकर स्वरूप स्वस्थ मानसिकता के क्षत-विक्षत करेवाला होखे भा सकारात्मक सोच के नकारात्मक दिशा में मोड़ेवाला होखे।

सवाल ई बा कि जीवन में नैतिकता के संचार करेवाली लोककथन के बचावे खातिर लड़ी के ? जवाब बा- साहित्य शिल्पी। उनकर गढ़ल शब्द, वाक्य आ पारंपरिक लोककथा। बस ईहे हथियार त हमनी का भीरी बाटे। एह दिशा में 'भोजपुरी लोककथा-मंजूषा' एगो नया हथियार का रूप में हमनी का सोझा बा। भगवती प्रसाद द्विवेदी के एह कोशिश खातिर खाली दू शब्द कहिके हम संतुष्ट ना हो सकबि। हम त चाहबि कि साहित्य आ संस्कृति के बचावे के एह कोशिश के सरस्वती माई अनवरत ऊर्जा देसु, जवना से अपसंस्कृति के इमारत खँड़हर बन जाउ।

'भोजपुरी लोककथा मंजूषा' में 102 गो लोककथा बाड़ी सन। एक-एक

कथा से एगो सुसंस्कृत, ऊर्जा से भरल सकारात्मक संदेश मधुर आ मनोरंजक शैली में मिलता। उदाहरन खातिर,

कउआ हँकनी - घरेलू विवाद में परदा का पीछे के बात समुझले बेगर फैसला लीहल समझदारी ना कहाई।

खूँटा में दाल - अपना हक खातिर अंत-अंत तक लड़े के चाहीं।

मूस के चल्हाँकी- ढेर चल्हाँकी नीमन ना होखे।

नेउर भाई- नकलो करे में अकल के जरूरत बा, नाहीं त फायदा का जगहा नुकसान होखे लागेला।

बुढ़िया के खिचड़ी- हकमारी करेवालन के दुर्गति निश्चित बा।

संक्षेप में हम कहल चाहबि कि भगवती प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित 'भोजपुरी लोककथा मंजूषा' भोजपुरी लोककथा के एगो अपूर्व संग्रह बाटे। एहमें अलग-अलग संदर्भ के भोजपुरी लोक में फइलल कहानियन के लेखक बहुत सावधानीपूर्वक एकत्र कइके सहज आ स्वाभाविक अंदाज में परोसता। बचपन के जिंदा राखेवाली, जवानी के सम्हारेवाली आ बुढ़ापा के नया ऊर्जा से भर देबेवाली, घर-घर के अपूर्व गोंद से जोड़ेवाली मूल्यन के संरक्षिका आ भारतीय संस्कृति के धरोहर एह किताबि के जरूर पढ़ल जाएके चाहीं।

समीक्ष्य कृति

भोजपुरी लोककथा-मंजूषा
लेखक : भगवती प्रसाद द्विवेदी
प्रकाशक : हिंदुस्तानी एकेडमी
12 डी, कमला नेहरू मार्ग,
इलाहाबाद-211001
प्रथम संस्करण : 2018
मूल्य : रु. 310

कहानी

सेरोगेट मॉम

कृष्ण कुमार

रात के एक बजत रहे। अन्हरिया रात। झन-झन बोलत। सभे पटुआइल। एकदम सुनसान। आगा-पीछा केहु ना। चारों ओरे अन्हारे-अन्हार। घर के दीया-डिबरी बुताइल। केवाड़ी के पाला तऽ डेराइल दुबकल सरसती के ओह राति पसन से बुझा गइल कि रात के रात काहे कहल जाला। काहे केहु बेसबुर होके भोरहरिया के बाट निहारेला। दरद से भहरात देंहि। थोबड़ा आ दूनों हाथ के कलाई खूने-खून। उनुका बुझाते ना रहे कि कहंवा के खून पहिले पोंछीं। तब ऊ सोच लेली, आजु कसहूँ भोर होखे से पहिले ससुरा छोड़ि देबे के बा। एह जलालत भरल जिनिगी से बिना उबरले कामयाबी ना मिलि।

सरसती के जनम एगो छोटहन पिछुआइल गांव में भइल रहे। स्कूल के नाम पऽ गांव से कुछ दूर एगो मिडिल स्कूल। उनुका पढ़ाई से बहुते लगाव रहे। क्लास में अउव्वल। पढ़ाई आ गीत दूनों में। अपना सहपाठिन के मदद करे वाली। पढ़ाई के ऊ आपन सखी, सहेली, हमदम सभ समझत रही। टीचरन के दुलारी-प्यारी। 'टीचर जी' शब्द से बहुते प्रभावित। ऊ रोज समय से पहिले स्कूल के गेट पऽ जा के खाड़ हो जात रही। स्कूल में आवत टीचर लोग के देखत उनुका बड़ा निम्मन लागत रहे। तब ऊ ख्यालन में गुम हो के सोचे लागसु-काश ! कबो हमहुं 'टीचर जी' कहइतीं।

धनी-मानी बाकिर नमरी कंजड़ आ कट्टर रूढ़िवादी बाप के बेटी रही सरसती। मैटरिक पास करे से पहिलहि उनकर बाप जुआठि फेंकि देलें,''अब गोईंठा में घीव ना सुखवाइबि।जतने आगापढ़ाइबि ओतने तिलक-दहेज अधिका देबे के परी। जवन पइसा पढ़ाई में खरचबि,ओह से निम्मन ई होई कि एकर हाथ पिअर कऽ दीं।''

ना-नुकुर करत रही सरसती। छान-पगहा तुरावत रही। बाकिर उनकर एगो ना सुनलें उनकर बाबूजी। 'पानी पीजै छान, बेटी दीजै जान।' एहू बात के तजबीज ना कइलें। आगा-पीछा कुछुओ ना बिचरलें। दांये-बांये कुछुओ ना सवचलें। कांचे उमिर में एगो बेरोजगार लफनदर लइका सुमन से उनका के बिआहि देलें। राम परलें कुकुर के पाला। ऊ खाली बेरोजगारे ना रहे नमरी पाजी। अहो नाथ कुछ बाकि नाहिं। लइकांईये में सुमन के माई गुजर गइल रही। बाबूजी पूरा लाड़-पेआर से उनका के पलले-पोसले रहन। ओकर बाबूजी त निहायत मामूली किसान रहन बाकिर तबो ऊ सभ

बाप लेखा अपना बेटा के पढ़ा-लिखा के बड़ आदमी बनावल चाहत रहन। बाकिर सफल ना हो पवलें। अँखुए पऽ लाही मार देलस। बेटा लफुआ निकल गइल। पढ़ाई छोड़ि सभ खुरफात ऊ लइकांइये में सीख के पक्का हो गइल। एक कश लगवलसि आ नशीला धुंआ से इयारी के सिलसिला ओकर शुरू हो गइल। जवन समय के साथे अवरू मजबूत होत गइल। पांचवा क्लास तक आवत-आवत सभ नशा के आदी हो गइल। कॉपी-किताब बेंचि के सिनेमा देखे लागल। हाई स्कूल पास करे से पहिले पार्ट टाइम मेहनत क के चोरी, शराब आ जूआ खेले में महारथ हासिल क लेलस।

अनसा गइलें बाबूजी। डांट-फटकार, मार-पीट सभ क के थाकि गइलें। कोटिन जतन कइलें बाकिर बेटा के गाड़ी पटरी पऽ ना आइल। आखिर में इयार-संघतिया सलाह देलें,'' एकर बिआह क दऽ। जवान होइये चलल बा। गोड़ में पैकड़ लागि जाई आ ई राह पऽ आ जाई।''

लोगन के सलाह आ अपना से तजबीज क के ओकर बाप ओकरा के बिआहि देलें।

ससुर के प्रभुताई प उतरल पतोहि के हालात जग जाहिर बा। कुछ दिन तक त सभ ठीक-ठाक रहल बाकिर बाद में अइसन ना गड़बड़ाइल कि सरसती फेरा में पर गइली। बीतत समय के साथे उनका एगो बेटी भइल। घर में मुरदनी पसर गइल। ससुर-सवांग कपारे हाथ ध के बइठ गइलें। दू से तीन हो गइली सरसती। बेटी के जनमते ऊ अपना मन में दृढ़ संकल्प क लेलि,''कुछुओ होई बाकिर ना मानबि। मेहनत-मजदूरी, कूटवनी-पिसवनी क के कसहूं अपना एह बेटी के पढ़ा-लिखा के अफसर बनाइबि।''

अपना ना पढ़ला के मलाल उनका दिल के हमेशा सालत रहे। उनका मन में एह घाव के टभकन कबो ना थिरात रहे।

बेटी के जनम लेते घर में कलह-कंकार बढ़े लागल। आखिर में सुमन मारे-पीटे लगलें सरसती के। दारू पी के सुमन सुतली रात में घरे आवे आ सरसती से उलझि जात रहे। ससुर रात के खा-पी के खेते-बधारी सुते खातिर निकल जासु। धरहरिया आ बीच-बचाव करे वाला घर में केहु ना। नशा में पागल हो जात रहे सुमन। शांत-भाव से समझावसु सरसती। बाकिर ऊ उनकर कुछुओ ना सुने। बुरबक के खूंटा लेखा दवरे पऽ जस के तस अड़ल रहत रहे। तनिको ओनइस-बीस ना। बस उहे हाल,'आन्हारा के लउके हजारीबाग। जइसे बांस में कतनो पानी डाल के फल- फूल नइखीं उगा सकत, उहे हाल रहे सुमन के।

आखिर में आजीज आ गइली सरसती। हमेशा सोचसु-एकर कवनो हल निकालल बहुते जरूरी बा। एह घुट-घुट के जिअला से मुअल बढ़िया होई तले दोसर लहरा मन में उठे-कायर मुएलें। जिनिगि से पलाएन करेलें। जिनिगि जिए खातिर मिलल बा। दुख तकलीफ से फारिग होखे खातिर मुअले एगो राह नइखे। ठीक से जिए खातिर ढ़ेर राह बा। कुछ दोसर राह सोचल जाउ। एह तरीका से अपना मन के बटोरत रही।

एही बीचे भाई के बिआह लागल। सरसती भाई के साथे नइहर आ गइलीं अपना माई से सभ दुःख-सुख बतवली। माई उनका के ढ़ांढस देत कहली,'' घबड़ा मत। रात के बाद दिन होला। जे दुःख करेला ओकरे सुख भेंटाला। भगवान चहिहें तऽ तोहार भाग्य पलटा खाई आ सुख के दरिआव में तू पँवरबू।''

संजोग अइसन भइल कि उनकर पड़ोसिया सहपाठी नरेश ओह घरी गांवे आइल रहन। ऊ दिल्ली में निम्मन नौकरी करत रहन। पढ़ाई के बेरा सरसती आ नरेश में बड़ा मेल रहत रहे। दूनों लोग पड़ोसिया रहले रहन। आपुस में बोल-बतिया के समझि-बुझि के स्कूल परीक्षा के भरपूर तइयारी कऽ लेत रहन। बाकिर तबो दूसरा पोजिसन पर रहत रहन नरेश। सरसती के पहिला पोजिसन से धसोरि ना पवलें। बाकिर करम फूटल सरसती के। लइकी जाति। उनकर बाबूजी उनका भेजा के ना तउललें। बिआह कऽ देलें सरसती के। बाकिर नरेश के पढ़ाई होत गइल। कम्प्टीशन फेस कइलें आ बड़का अफसर के कुरसी पा लेलें।

पढ़ाई वाला रिश्ता इयाद परल सरसती के आ बेटी के साथे पहुंचि गइली नरेश के घरे। आपना ससुरा के सभ कहानी बतवली नरेश से,''ना जाने कवन करम कइले रहि कि निकाम्मा सवांग से पाला परि गइल। नमरी नशेड़ी ।हम त पूरा कोशिश कइनी कि सवांग के समझा-बुझा के रास्ता प ले आईं। बाकिर हमार एको बात ना माने। उलटे उलझि जाला। हमरा के मारे-पीटे लागेला। बड़ी अफदरा में परल बानी। आँखिन के सोझा अन्हरिया लउकऽता। बुझात नइखे कि का करी ? कइसे एह संकट से उबरी ? जाये दऽ, हमार बात छोड़ऽ, हम त गड़हा में गीरिये गइनी बाकिर हेह बेटी के देखऽ। एकर पढ़े के उमिर हो गइल बा बाकिर आजु तक कवनो स्कूल में एकर दाखिला ना करा पवनी। एकर जीवन राह प कइसे आई एकरा बारे में कुछ सोचऽ। हमरा के कवनो राह बतावऽ आ एह धरमसंकट से उबारऽ।'' ई कहत हलक में हलफनामा फंसे लागल, मुंह सुखा गइल, आ आंखिन से लोर ढरके लागल।

सरसती के बतकहि सुनि नरेश बड़ा दुखी भइलें। उनका थथमा लागि गइल। दस डाढ़ि मन दउरे लागल-हम का कर सकऽतानी सरसती खातिर ? सवांग जोग रहित त ढ़ेर उपाय कइल जा सकत रहल हा। बिना मेंह के दंवरी करावे के बा। दिमाग के नस तना गइल बाकिर ऊंट कवनो करवट ना बइठत रहे। उजबुजा गइलें नरेश। अन्त दांव में सरसती से कहलें,''घबड़ा मत। हमरा के एक-दू दिन के मोहलत दऽ। हम तोहार आ तोहरा बेटी दूनों के उपाई बहुत जल्दिये कऽ देबि।''

सरसती अपना घरे चली गइली। दिमाग प जोर देके सोचे लगलें नरेश-पढ़ाई के बेरा कइसन रही सरसती। चेहरा भभकत रहे। आजु कइसन हो गइली। ठीक कइल गइल बा शस्त्र, शास्त्र आ मेहरारू ई तीनों अपने-आप में बहुते काबिल होला। बाकिर जोग मरदाना के हाथे परि के जोग हो जाला आ अजोग के संगत भइला पऽ अजोग हो जाला । का रही सरसती आ का हो गइली ? सुदामा के बिगड़ला समय में कृष्ण संघतिया भइलें। मदद कइलें। हम आ सरसती त ओइसने रहीं जा। एक साथे पढ़त रहनी जा। पढ़ाई में हमार सहयोग करत रही सरसती। जवन ना बुझात रहे, कापी-किताब के साथे पहुंचि जात रहीं सरसती लगे। बिना ना-नुकुर कइले पसन से ऊ हमरा के समझावत रही। आजु उनकर दिन पातर हो गइल बा। अगर हम उनकर तनिको मदद क दे तानी त उनका ऋण से हम उबरि जाइब। बहुत तरीका के लहर उठे दिमाग में आ फेरू थिरा जात रहे। अन्त दांव में एको बात उनका इयाद परल। दिल्ली में उनकर एगो बगलगीर रहत रहन। अफराद धन-दउलत। बाकिर कवनो बाल-बच्चा ना। दूनों परानी कतना लोग से लइका गोद लेबे खातिर पूरहर कोशिश कइलें। बाकिर केहु ओह लोग के एह लालसा के ना पूरावल। ओह लोग के कामना अधूरे रहि गइल। आखिर में ऊ लोग किराया के कोख के चक्कर में रहे लोग। मुंह-मांगा रोपेया देबे प तइयार रहन। जे केहु आपन नजदीकी रहे। सभका से ऊ लोग आपना जोगाड़ के बारे में कहत रहन। नरेश के अचके में दिल्ली के ओह आदिमी के इयाद आ गइल। सोचे लगलें-सरसती ओकरा काम खातिर ठीक मेहरारू बाड़ी। एह से सरसतियो के जीवन पार लागि जाई आ उनकर बेटियो निम्मन से पढ़ि-लिखि जाई। आ ओह दूनों परानी के खुशी भेंटा जाई। चार जीव एक साथे आबाद हो जाई। आ हमरो लोक-परलोक दूनों सुधरि जाई। तले एगो दोसर लहर उठल नरेश के मन में-का जाने सरसती एह काम खातिर तइयार ना होखसु। अन्यथा मान लेसु त ई अवरू

बाउर हो जाई। पड़ोसिया के बात बा। आग-पाछ में परि गइलें। हमहूं सरकारी नोकरी करऽतानी। ओकरा ससुरा के जनिहें सऽ त हमरो दू गो रोटी खाइल मोहाल क दिहें सऽ। प्रशासन-पुलिस के अझुरा में अझुरा जाए के परी। का करीं आ का ना ? एहि में उनकर मन सउनाइल रहि गइल। ततलजबे उनका मन में एगो दोसर तूफान मचल-'नो रिस्क, नो गेन'। दोसरा के खुशी देबे खातिर आपन खुशी त हटावहिं के परेला। बिना फेरा में परले ई काम कबो फतह ना होई। एह से ऊ आपन मन कड़ा कइलें। आई आम कि जाई झटहा वाली मन बनवलें। जवन आगा आई तवन देखल जाई। अपना एह सोच के काम रूप देबे खातिर बिहान होते सरसती के बोलवलें आ प्रेम से कहे के शुरू कइलें,'' देखऽ, समय बड़ा बाउर आ गइल बा। इज्जत से दू पइसा कमाइल बहुते मोसकिल हो गइल बा। ओहू में मेहरारू-लइकी के त बाते छोड़ि दऽ। ओहनिन के दिन-दशा त अवरू पातर हो गइल बा। एह ममिला में पूरा दिल्ली महकी गइल बडुए। हम तोहरा खातिर एगो बात सोचनी हां। अगर तोहरा पसन होखे त तू कहऽ। एह काम के बारे में केहु से तोहरा कहे के नइखे। खाली हम जानी आ तू जानऽ। दोसर जान जाई त हमरा कुछ परेशान हो जाए के परी। एह से तू अपने तक एह बात के रखिहऽ। कहऽ त कहीं।''

''कहऽ, कवन काम हऽ। हमरा जोग होई त हम करबे करबि। ना त कवनो बाते नइखे।''

''सेरोगेट मरद बनबू ?''

''ई का कहाला। हम त ई जानते नइखीं। ई कइसन काम हऽ।''

''ई बहुते निम्मन काम हऽ। संतान सुख से वंचित दंपती खातिर दोसर मेहरारू कृत्रिम रूप से गर्भ धारण करेली। ओकरे के सेरोगेट मदर कहल जाला। सेरोगेसी विधि में संतान सुख के इच्छुक दंपति में से पिता के शुक्राणुअन के एगो स्वस्थ मेहरारू के अंडाणु के साथे प्राकृतिक रूप से निषेचित कइल जाला। माता-पिता के अंडाणु आ शुक्राणु के मेल परखनली विधि से करा के भूरण तइयार कइल जाला। सेरोगेट मदर के 'नेचुरल ओव्यूलेशन' के समय एह तइयार भ्रूण के ओकरा गर्भाशय में प्रत्यारोपित कइल जाला। एह में बच्चा के जेनेटिक संबंध सिर्फ माई आ बाप के रहेला। सेरोगेट मदर से ओकरा कवनो संबंध ना होखे। ओह नव महीना के पूरा समय में सेरोगेट मदर के 'ओरल पिल्स' खिआ के अंडाणु-विहीन चक्र में राखल जाला। एह से बच्चा पैदा होखे तक ओकर आपन अंडाणु ना बने। इहे बात बा। तू पसन से सोच-विचार लऽ तब हम आगा गोड़

बढ़ाइबि। ओह आदिमी से बतिआइबि जेकरा बाल-बच्चा के जरूरत बा।''

''एह काम के एवज में हमरा का भेंटाई ?''

''बहुते बढ़िया सवाल पूछलू। त सुनऽ, एह काम के कवनो बन्हुआ फीस नइखे। ओइसे केहु चार लाख, केहु पांच लाख देला। बाकिर तू सोरहो आना मन बना के अगर एह काम में अपना के लगइबू, त हम ओह पार्टी से पूरे-पूरी दस लाख रोपेया ओह नव महीना के अंदर तोहरा के दिअवा देबि। नरमल ना हो के अगर सिजेरियन बच्चा के जनम होई त पांच लाख अवरू ऊपर से दिअवा देबि। काहे कि ऊ पार्टी पूरा मालधनी बा। ओकरा घरे रोपेया झिंटिका भइल बा। एह से रोपेया खातिर त सोचबे मति करऽ। दिल खोलि के साफ कहऽ त हम एह काम में लागि जाईं।''

''अच्छा हमरा के मोहलत दऽ। हम अपना मन-मिजाज के तौलि के तोहरा के बताइबि।''

जे ना देखल गोड़हुल ऊ देखल भुसहुल। तेजी से डेगरगर गोड़ बढ़ावत सरसती अपना घरे अइली। रोपेया जे ना करम आदिमी से करा देबे। जज-कलक्टर, हाकिम सभे रोपेया प बिकाता। सरसती त एगो लचार मेहरारू रही। बंद राहन के बीचे घेराइल रही।

ससुरा के हालात खतमे समझीं आ मरद नालाएक। तब ऊ तनिको देरी ना कइली आ दोसरा दिने नरेश लगे पहुंचि के आपन स्वीकृति दे देली। ओकरा बाद त नरेश रेल हो गइलें। ओहि घरी ओह पार्टी लगे मोबाइल लगवलें आ सभ बात बता देलें। आ साफ-सूफ बतकही कइलें,''हम रउआ सभे के एह काम खातिर अपना चचेरी बहिन के तइयार कइनी हां। दस लाख रोपेया लागी। ओकरा एगो बेटी बिया। ओकरो खरच रावा सभे के देबे के परी।'

नरेश के बतकही सुनि ऊ पार्टी बड़ा अगराइल। ओकरा खुशी के ठेकाने ना रहे। ऊ लोग कहल,''जब राउर चचेरी बहिनिये बाड़ी त का सोचे के बा। दस हजार रोपेया उनका के एडभांस दे देबि। एइजा रावा आइब त हमनी के ऊ रोपेया रावा के दे देबि जा।''

ओह पार्टी से बतकही भइला के बाद नरेश सभ बात सरसती के बता देलें आ हिदायत कइलें,''ई बात केहु के जाने के ना चाहिं। आ तोहरा एहिजा से ना, अपना ससुरा से दिल्ली आवे के बा। चतुर बहिन बाड़ू। तोहरा के का समझावे के बा ? ससुरा जइह। सवांग जाहि दिन तोहरा जोरे अनेति करिहें, कलह-कंकार मचइहें। बेटी के साथे गंव लगा के आगा-पीछा देखि के दिल्ली के गाड़ी पकड़ी लिहऽ। हमरा के मोबाइल से बता दिहऽ। टीसन

प जसहिं उतरबू, हम तोहरा के 'रीसीभ' क लेबि। हई दस हजार रोपेया तोहरा के दिल्ली आवे खातिर दे तानी। एकरा के जतन से धऽ लऽ।''

भाई के बिआह भइला के बाद ससुरा आ गइली सरसती। हप्ता-दस दिन तक सभ ठीक-ठाक रहल। फेरू कलह-कंकार शुरू हो गइल। ओह रात सवांग उनका के पूरा मरले-पीटले रहे। बड़ा फेरा में परल रही सरसती। ओहि राति दृढ़ संकल्प क लेली- होखे दऽ बिहान। अब एह मटिलगना के घर में ना रहबि। घुट-घुट के जिअला से मुअल निम्मन हऽ। अब एको सेकेन्ड ज्यादती ना सहबि।

राति के चउथा पहर शुरू भइल। पूरूब आकाश में सुकवा उगल। मूर्गा बांग देलसि।सिवान में सिआर हुँआ-हुँआ कइलें स। सवांग नशा में डूबल नाक फोंफिआवत रहे। ससुर खरिहानी में सुतल रहन। अबहिं लोगन के सुगबुगाहट इचिको ना रहे। बेटी के गोदी में उठवली आ दिल्ली के जतरा प निकल गइली सरसती। टीसन प आवते नरेश लगे फोन लगवली,''हम अपना ससुरा से निकली गइनी। टीसन प आइल बानी। फरक्का इक्सप्रेस आ रहल बा। जल्दबाजी में रिजरभेसन के टिकट त ना मिल सकल। एह से साधारण डिब्बा के टिकट मिलल हा। लोग बताव तारें,''फरक्का इक्सप्रेस में साधारण डिब्बा दू गो आगे आ चार गो पीछा रहेला। पसन से सीट मिल जाई। हम फरक्का इक्सप्रेस में पिछहिं वाला डिब्बा में रहबि। तू टीसन प जरूर चलि अइहऽ।''

दिल्ली टीसन से नरेश के साथे सरसती उनका अपार्टमेंट में आ गइली। सुबह होते उनका के पार्टी से मिलवा देले नरेश। सरसती के देखते ऊ दूनों परानी जुड़ा गइलें। सरसती सांचो के सरसती रहली। आगे के कार्रवाई में सभे लागि गइल। एक महीना के भीतरे सरसती सेरोगेट मदर बनि गइली। बैंक में खाता खोलवली आ भेंटाइल रोपेया जमा क देली। बेटी के साथे नरेश के अपार्टमेन्ट में रहे लगली। नरेश के परिवार गांव पऽ रहत रहे। एह से नरेश के छोड़ि केहू एह बात के ना जानि पावल।

सरसती के ससुरा में खलबली मचल। हितई-नतई सगरे धाव-धूप कइल लोग। बाकिर सरसती के आह-अंटकार कुछ ना भेंटाइल। हारि-थाकि के थाना में गुमशुदी के रिपोर्ट लिखावल गइल बा। पुलिस सरसती के ढुढ़ि रहल बिया। एगो नेक मकसद के पूरा करे खातिर सरसती साहसिक कदम उठवले बाड़ी। कोख उधार देबे से मिले वाली राशि से ऊ अपना एकलौती बेटी के खुशहाल करिहें। ओकरा के पढ़इहें। आ बेटी के अफसर बनावे वाला अपना सपना के पूरा करिहें।

एह से निहोरा बा, कि रावा पुलिस के ई बात कबो मत बताइब कि सरसती कहँवा बाड़ी ना त उनकर सपना अधूरा रहि जाई आ नाहक में नरेश के हाथ में हथकड़ी आ डाँड़ में रास्सा बन्हा जाई।

गीत

संगीत सुभाष

1

जागि कटे रैना,
निंदिया ना आवे नैना।

अकबकि जिया, साँस-गति दूनी
घर-अँगनइया लागे सूनी
मलछत मन मैना।

झींगुर झनकि कपार जरावे
तनिको खटक देह सिहरावे
छीनि गइल चैना।

रूपरतन मनपंछी जोहे
उड़ि-उड़ि महल अटारी टोहे
थाकि रहल डैना।

आस तहार जिअवले बाटे
विरहा अगिनि जरवले बाटे
जिनगी के तै ना।

2

चहुँओरिया छवलसि हरियरी, बसंती आगम जनाता।
गोरी बेसाहेली चुनरी, बसंती आगम जनाता।

मोंजरि का अँचरे लुकाइल टिकोरा
तितली कुलाँचेले भँवरा का जोरा
मांगेली नगवाली मुनरी, बसंती आगम जनाता।

तीसी बतीसी के रहिला रिगावे
गेहूँ गुँड़ेरि आँखि ताके, धिरावे
माथे सरसो बान्हे पियरी, बसंती आगम जनाता।

कूदे बछरुआ तुरावेला पगहा
मादक पवन, गंध पसरल सब जगहा
पागल मन लागे ना सुधरी, बसंती आगम जनाता।

सजनी बोलवली ह साजन के अँगना
जाईं, लिआईं अबे गोड़रंगना
डालि आँखिन में आँखि कजरी, बसंती आगम जनाता।

धरम के कोख से जनमल स्वतंत्रता के पहिलका संग्राम

केशव मोहन पाण्डेय

आज मन कुछ बेचैन बा, कुछ शांत बा। मन के कवनो कोना में तनीक उथलो-पुथल हो ता, त कवनो कगरी शांतिओ के आसन बा। देश में चारू ओर धरम के राजनीतिकरण पर सभे चर्चा में लागल बा त अपना-अपना चसमा से देख के सभे धरम के व्याख्या करत बा। लोग खातिर धरम कुण्ठा के कुण्ड बनल बा त गतिशीलता के नाम। सामाजिक संकीर्णता के साक्षात करावत बा त राजनैतिक परिवर्तन के ताकत बा। धरम क्रांति के चिंगारी बा त सत्ता के सुख देबे वाला साधन। धरम टीका-त्रिपुण्ड के चंदन बा त धरम करम-कर्तव्य के पोथी। धरम धीरता के धूरि बा त धृष्ठता के धुँआ। केतना लोग खातिर धरम जिनगी के सगरो सुख के साधन बा त केतना लोग खातिर अवैज्ञानिक आ अप्रमाणिक शोर- शराबा।

आज हमरो मन एह गहन आ अपरिमित विषय पर बेचैन बा। बेचैन बा कि अगर धरम ना रहीत त आज के समाज, आज के भारत कहाँ रहीत। ना गाँधी के लाठी-लँगोटी के कवनो प्रतीक रहीत ना अंबेडकर के प्रगतिशील चिंतन के प्रमाण। ना लाला लाजपत राय के लाठी मिलल रहीत ना सरदार पटेल के लौह-पुरुष के उपाधि। आजु के भारत पता ना कबले अंग्रेजन के गुलामी में सँसरी चलावत वेंडिलेटर पर सुतल भारत बनल रहीत। हमरा विचार से भारत होखे, चाहें विश्व-समुदाय, धरम सबके बन्हले रहले बा। धरमे के कारण विश्व में बड़का-बड़का क्रांतियन के जनम भइल आ सफलता मिलल। इतिहास गवाह बा कि फ्रांसीसी क्रांति के पहिलका चरण के गतिविधि में सबसे पहिले चर्च पर नियंत्रण कइल रहे। राष्ट्रीय संविधान सभा चर्च पर नियंत्रण क लेहले रहे। एह मामला में चर्च के राज्य के अधीन लेआइल गइल आ रोम के पोप के प्रभाव से छोड़ा के राष्ट्रीय चर्च में बदलल गइल। राज्य खातिर पादरी लोग के वफादारी निश्चित करे ला 'सिविल कांस्टीच्यूशन ऑफ क्लर्जी' बनल। ओहके अनुसार पादरी लोग के राज्य खातिर निष्ठा के कसम लेबे के पड़े आ ओह लोग के जनता चुने। पोप आ कुछ पादरी लोग

एहके विरोध कइल। एह कानून के कुछ छोटका पादरी लोग विरोध कइल आ कुछ लोग देश छोड़ के यूरोप के क्रांति के विरोध में प्रचार करे लागल, बाकिर एह सगरो धार्मिक बदलाव से फ्रांसीसी क्रांति के बल मिलल।

संत कबीर जइसन सामाजिक आंदोलनकारी के जवन रूप आज समाज-साहित्य में बा का कवनो तरह से ओहके धरम से अलगा कइल जा सकत ता? धार्मिक आडंबर के तूरे वाला कबीर आजु जवना रूप में भारत के मानस में विद्यमान बाड़ें, का ओहमें मुल्ला लोग के कट्टरता नइखे? का हिंदू आडंबर आ कट्टरता के हाथ नइखे ? का 'गौरवशाली क्रांति' चाहे 'रक्तहीन क्रांति' में धरम के हाथ नइखे? जहवाँ ले हम पढ़ले बानी, गौरवशाली क्रांति के कारन में धार्मिक कारण महत्त्वपूर्ण रहे। जइसे कैथोलिक धरम के प्रसार, टेस्ट अधिनियम के स्थगित कइल, धार्मिक अनुग्रहन के घोषणा, सात पादरी पर अभियोग लगाके बंदी बनावल, नवका कैथोलिक गिरिजाघर आदि ओह क्रांति के कारनन में से रहे।बात वाणिज्यिक क्रांति के देखीं। इसाई लोग के पवित्र तीरथ जेरूसलम के तुर्कन से छोड़वावे खातिर सन 1095 ई. से 1291 ई. ले, एगो लमहर धर्म युद्ध चलल, जवना के क्रुसेड कहल जाला। ओह धर्म-युद्ध के एगो महत्त्वपूर्ण प्रभाव ई भइल कि भारत के भोग-विलास के सामानन, मालाबार क्षेत्र के आ पूर्वी द्वीप समूह के मसालन आदि के पता चलल। तेरहवीं सदी में मार्कोपोलो वेनिस से चीन आ जापान के यात्रा कइले। मार्कापोलो के विवरणो से यूरोपवासियन के पूर्वी देशन के सामानन के बारे में जानकारी मिलल। ओह सब घटना के प्रभाव ई भइल कि अब पूर्वी देशन के भोग-विलास के सामानन आ मसाला के माँग यूरोप में होखे लागल। एह तरे से धार्मिक क्रांति के असर से यूरोप में एगो नया वर्ग 'व्यापारी-वर्ग' के उदय भइल।

इतिहास के कवनो पन्ना के पलटीं, क्रांति के कवनो स्वर के देखीं, हर हाल में, हर काल में साहित्य, समाज आ परिवर्तन, सब धरम से प्रभावित रहल बा। बात कवनो बहाने होखे, धरम आदमी के, समाज के आ इतिहास के हर काल-खण्ड के प्रभावित कइले बा। भारत के त कई देशन में धर्म-भीरु देश कहल जाला। ई वक्तव्य देबे वाला के संकुचित सोच के प्रमाण ह। भारत धरम के डंका बजावे वाला देश ह। धरम पर चले वाला देश ह आ धरम के आधार पर सजत-सँवरत देश ह। भारत के माटी पर अनगिनत अइसन सपूत जनमल बाड़े जे धरम के व्यापक व्याख्या दे के संसार में आपन लोहा

मनववले बाड़े। स्वामी राम कृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द जइसन कुछे ना, अनगिनत नाम बा जे विश्व-पटल पर अपना मेधा से सिद्ध कइलस कि भारत में व्याप्त धरम का ह? धरमें के कारण आदमी आदमी बा, ना त पशु के अधिका कुछ ना रहीत -

आहार निद्रा भय मैथुनं च
सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम् ।
धर्मो हि तेषामधिको विशेषः
धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः।।

भारत के माटी के मान्यता खाली आदमीए ले ना, ईहाँ त ई मानल जाला कि जब-जब धरम के मान घटी, भगवान तब-तब अपनही अवतार ले के ओकर रक्षा करीहें। तुलसी दास के ई चैपाई के नइखे सुनले -

जब-जब होइ धरम के हानी।
बाढहिं अधम असुर अभिमानी॥
तब-तब प्रभु धरि विविध सरीरा।
हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा॥

चाहे महाभारत के अलाप त कान में गइलहीं होई -

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत !
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानम् सृजाम्यहम !

अब केहू का कही? भारत के माटी पर इंसान त इंसान, भगवानो लोग धरम के रक्षा खातिर तत्पर मिल जालें। भारते काहें, चाहे इंगलैड के चुनाव होखे, चाहे अमेरिका के, अगर धरम के ताकत ना रहीत त उम्मीद्वार लोग के गिरिजाघर में जाएके का गरज पड़ीत? गिरिजाघर के संबोधित करे के काहें समय निकाले के पड़ीत?

जी, बात हम ई कहे के चाहत बानी कि जे कहेला कि हम धार्मिक ना हँईं, ऊ पक्का तौर पर आदमी नइखे हो सकत। आहार, निद्रा, भय आ मैथुनं में लिप्त पशु हो सकत बा। धरम खाली भगवान के सामने, चाहे अल्लाह के सामने माथा टेकले ना ह, धरम त कर्तव्य के पावन रूप ह। धरम त गाँधी जी के सत्य आ अहिंसा ह, धरम त बुद्ध के ऊ प्रेरणा ह, जवना से प्रेरित हो के ऊ आपन बाल-बच्चा छोड़ के समग्र के कल्याण खातिर घर छोड़ देहले। धरम त दधीची के अस्थी-पंजर के दान ह। शिवी के अंग दान से ले के कर्ण के कवच-कुण्डल के दान ह।

खैर, तर्क चाहें केतनो दिहल जाव, धरम के सगरो रूप आज के आदमी में पइसल बा। जब आज बात पहिलका स्वतंत्रता संग्राम के हो ता त हमके ई पूरा धार्मिक पावनता के ऊपज लागेला। बात हम बलिया के नगवा के माटी पर जनमल मंगल पाण्डेय के करत बानी। वीर बाँकुरा मंगल पाण्डेय रोटी आ रोजगार के फेंटा में फेंटा के अंग्रेजन के

सगरो शर्त मान के के पूरा ओकनी के नोकरी करस। अंग्रेजन के एगो ईशारा पा के अपना भारत के सपूतन के मारस। देश के खातिर ना तनिको दया बचल रहे ना भाव। सोंचीं कि कवन ऊ ताकत रहल, जवना कारने एगो साधारण सैनिक भारत के पहिलका स्वतंत्रता संग्राम बिगुल बजा दिहलस ? जब हम ई सोंचे लगनी तब धरम के ताकत के अंदाजा लागल। धरमे एक मात्र कारण रहे कि भारत के पहिलका स्वतंत्रता संग्राम के नींव दिआइल। धरम से अलगा कइसे देखीं हम। ऊहे कारन रहे कि सामान्य ब्राह्मण परिवार में जनमला के कारने अपना जवानी में मंगल पाण्डेय के रोजी-रोटी के मजबूरी अंग्रेजी फौज में नोकरी करे के मजबूर क दिहलस। इतिहास में दर्ज बा कि ऊ सन 1849 में 22 साल के उमीर में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के सेना में शामिल हो गइले। मंगल पाण्डेय बैरकपुर के सैनिक छावनी में "34वीं बंगाल नेटिव इन्फैंट्री" के पैदल सेना में एगो साधारण सिपाही के नोकरी करे लगले।

ईस्ट इंडिया कंपनी के रियासत अउरी राज हड़प आ फेर से ईसाई मिशनरियन केधर्मान्तर आदि के नीति से लोग के मन में अंग्रेजी हुकुमत खातिर पहिलहीं नफरत पैदा क दिहले रहे। अब ओहमें जब कंपनी की सेना खातिर बंगाल इकाई में 'एनफील्ड पी. 53' राइफल खातिर नया कारतूसन के इस्तेमाल शुरू भइल त मामला अउरी बिगड़ गइल। ओ कारतूसवन के बंदूक में डालने से पहिले मुँह से खोले के पड़े। ओही बीच भारतीय सैनिकन के बीच में ई खबर फइल गइल कि ओह कारतूसवन के बनावे में गाय अउरी सूअर के चर्बी के उपयोग भइल बा। अब का? आस्था में आन्हर मनई तर्क ना जोहेला। मंगल पाण्डेय भले रोटी के मजबूरी में अंग्रेजन के हर हुकूम मानें, बाकिर जब बात धरम भ्रष्ट भइला पर आइल त मन दोसर हो गइल। उनका मन में ई बात घर क गइल कि अंग्रेज हिन्दुस्तानियन के धरम भ्रष्ट करे पर तूलि गइल बाड़ें। काहें कि गाय अउरी सूअर, दूनो हिन्दू आ मुसलमान दोनों खातिर नापाक ह। बर्जित ह।

भारतीय सैनिकन के साथे त पहिलहीं से भेदभाव होखे, अब ई नवका कारतूस वाला अफवाह आग में घीव के काम कइलस। बाति 9 फरवरी 1857 के ह, जब 'नवका कारतूस' देशी पैदल सेना के बाँटल गइल तब धरम भ्रष्ट भइला के डर से मंगल पाण्डेय लेबे से इनकार क दिहले। ओकरे कारन मंगल पाण्डेय से हथियार छीन लेबे के आ वर्दी उतार लेबे के हुक्म भइल। मंगल पाण्डेय ओह आदेश के माने से इनकार क दिहले। 29

मार्च सन् 1857 के दिने जब उनकर राइफल छीने खातिर अंग्रेज अफसर मेजर ह्यूसन आगे बढ़ले त उनका पर आक्रमण क दिहले। एह तरे धरम बचावे के जुगत में मंगल पाण्डेय बैरकपुर छावनी में 29 मार्च 1857 के अंग्रेजी सरकार के खिलाफ विद्रोह के बिगुल बजा दिहले।

मंगल पाण्डेय पूरा प्लानिंग के साथे विद्रोही आक्रमण कइले। आक्रमण करे से पहिले ऊ अपना अउरीओ संघतिया लोग से साथ देबे के आह्वान कइले। बाकिर अंग्रेजन के डरे जब केहू उनुकर साथ ना दिहल तब ऊ अपनहीं कमर कस लिहले। अंग्रेज अधिकारी मेजर ह्यूसन जब उनकर वर्दी उतारे आ रायफल छीने आगे बढ़ल त ऊ अपने रायफल से ओकर काम तमाम क दिहले। एतने ना, विकिपिडिया आ गूगल के स्रोत से कइगो लेखन से पता चलेला कि ओकरा बाद मंगल पाण्डेय एगो अउरी अंग्रेज अधिकारी लेफ्टिनेन्ट बॉब के मरले। धरम के हानि करे वाला अंग्रेजन खातिर उनका आँखि में खून खौल गइल रहे। पता ना, ऊ केतना जने के मुअवते? बाकिर तले बाकी अंग्रेज सिपाही उनका के पकड़ लिहले सों। उनका पर कोर्ट मार्शल से मुकदमा चलावल गइल आ 6 अप्रैल 1857 के फाँसी की सजा सुनावल गइल। फैसला के मानल जाव त उनका के 18 अप्रैल, 1857 के फाँसी दिहल जाइत बाकिर ब्रिटिश सरकार डेरा के दस दिन पहीलहीं, 8 अप्रैल सन् 1857 के फाँसी दे दिहलस।

वइसे त भारत के लोगन में अंग्रेजी हुकुमत से तरह-तरह के कारणन से घृणा बढ़त जात रहे, बाकिर गाय आ सूअर के चर्बी के बात धरम पर घात रहल। एह तरे बढ़त घृणा के तेज में मंगल पाण्डेय के विद्रोह एगो चिन्गारी के काम कइलस। ओही चिन्गारी के नतीजा रहे कि 10 मई सन् 1857 के मेरठो के सैनिक छावनी में बगावत हो गइल आ देखते-देखत सगरो उत्तर भारत में धरम के कोख जे जनमल भारतीय स्वतंत्रता के पहिलका संग्राम फइल गइल। एतने ना, 1857 में उनकरे बोअल क्रांति के बीआ 90 साल बाद देश के आजादी के सघन वृक्ष के रूप में तनीए गइल।

आजु-काल्ह धरम के नाम पर सगरो करम-कुकरम हो ता। आदमी धरम के लुग्गा में लुकाइल आपन नीमन-बाउर सगरो काम करत बा। ई त सबके सोंझा का कि धार्मिक प्रेरणा से भइल केतना काम सकारात्मक बा आ केतना नकारात्मक। काहें कि बात पहिले नियर नइखे। समय के साथे सोच बदलल बा। बाकिर सोचे के एगो बात जरूर बा कि रउरा जवना धरम खातिर लड़त-मरत

बानी, ऊ केतना युग-प्रवर्तक बा ? अगर नइखे, त राउर सोच पक्का गलत बा। धरम कबो गलत ना हो सकेला। सोच के ओही सफर में देश के आजाद करावे वाला देवता लोग के प्रति मन बारम्बार नतमस्तक हो ता आ कबीर के दोहा के मनका फेरत बा- कस्तूरी कुंडल बसै, मृग ढूँढत बन माहिं।
ऐसे घट-घट राम हैं दुनिया देखत नाहिं॥

---

*कई गो अपरिहार्य कारन से अभी वार्षिक सदस्य बनावल शुरू नइखे कइल गइल। जो **सँझवत** रउँआ पसन्न परल होखे, त रउँआ डाक से ओहके मङा सकींले। ओकरा कीमत 40/- रुपया में डाक खर्च जोड़िके रउँआ भेज सकींले, पत्रिका भेज दीहल जाई। ओइसे नीमन त ईहो होई कि आस-पास का मित्रो लोग खातिर जो कुछ प्रति एक साथ मङा लिहल जाई त सभका खातिर डाक खर्च में किफाइति हो जाई।*

- संपादक

भोजपुरी संगीत के बहुमूल्य रत्न अरुण राय

डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल

अइसे त कहल जा सकता कि अरुण राय उत्तर प्रदेश का मऊ जिला के कमरवाँ गाँव के रहेवाला हवे आ उनुकर वर्तमान निवास लखनऊ में बा। ऊ हिंदी, भोजपुरी, अंगरेजी का अलावे देश का कई गो भाषा में गावेलन आ साइते कवनो वाद्य यंत्र होई जवन ऊ ना बजावत होइहें। बाकिर बहुत कम लोग ई जानत होइहें कि ई हरफनमौला कलाकार पं. विष्णु नारायण भातखंडे का प्रिय शिष्य (आ) ग्वालियर घराना के दिव्य स्तंभ पं. नारायण लक्ष्मण गुणे के प्रिय शिष्य रह चुकल बाड़न।

चाहे शास्त्रीय संगीत के महफिल होखे भा सुगम संगीत के भा भोजपुरी लोक संगीत के, अरुण राय का बइठकी के मतलब कि श्रोता अब अघइले ना अघइहें। श्री राय मधुर कंठ के धनी गायक हईं। प्रचार-प्रसार से बहुत दूर रोजी-रोटी का अपना पेशा का प्रति बेहद ईमानदार एह सहज व्यक्तित्व का चेहरा पर कबो चिंता के लकीर ना देखल जा सके। आकाशवाणी आ दूरदर्शन के एह लोकप्रिय गायक के बाजार में भोजपुरी भजन आ लोकगीत के चार गो कैसेट बहुत लोकप्रिय भइले सन बाकिर केंद्र सरकार का सेवा में भइला का कारण उनुका पास एतना समय ना मिलल कि ऊ ओकर लाभ उठा सकसु।

समय आ गइल बा कि भोजपुरी के एह तरह के छिपल हस्तियन के खोज के निकालल जाव आ ओह लोगन के उचित सम्मान दिहल जाव। जतना भी भोजपुरी का विकास के संस्था बाड़ी सन, उहनी के चाहीं कि संगीत के एह विराट व्यक्तित्व के पद्म सम्मान खातिर अनुमोदित करे।

गिनल-चुनल प्रतिष्ठान, साहित्यकार आ समीक्षक लोगन के निःशुल्क प्रेष्य